

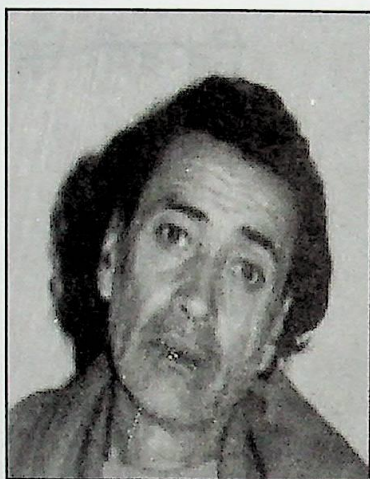
ज़िन्दगी के मारे लोग

पंडित विद्यारतन आसी



ज़िन्दगी के मारे लोग

कहना है तो मैं ही कहूँगा कि
है जो कि जिन्दगी के लिए सब
सब कुछ करेगा
सब कुछ करेगा



इक तकल्लुफ है मौत से मरना
हम सभी ज़िन्दगी के मारे हैं

ज़िन्दगी के मारे लोग

(गज़लें)

पंडित विद्यारतन आसी



चेतना प्रकाशन

पंजाबी भवन, लुधियाना

Zindgi ke Mare Log
Ghazals by
Pandit Vidya Rattan Aasi ©

Edit by
Khalid Hussian
Near Govt. High School
Bathindi, Jammu (J&K)
Mob. No. 94191-83485

ISBN : 978-93-5112-

Rs. 180/-

2017

Printed and Bound In India

Published by

Chetna Parkashan

PUNJABI BHAWAN, LUDHIANA (Pb.) INDIA

Ph. 0161-2413613, 2404928, (M) 98152-98459, 98762-07774

Website: www.chetnaparkashan.com

E-mail: chetnaparkashan@gmail.com

Sub Off.: Qila Road, Opp. Bus Stand, KOTKAPURA (Pb.) INDIA

Ph.: 95011-45039

Printer : R.K. Offset, Delhi

All rights reserved

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent in any form of binding or cover other than in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photo copying, recording or otherwise), without the prior written permission of both the copyright owner and the publisher of this book.

उन दोस्तों और अजीजों के नाम
जो मेरे लिए
फ़िक्रमंद रहते हैं।



बिन मक़सद के जीवन जीना कितना मुश्किल है
घाट घाट का पानी पीना कितना मुश्किल है

रूह की प्यास है लफ़्ज़ों से कहां बुझती है
बंद कर दो ये सहीफ़े ये किताबें अपनी

तरतीब

पं. विद्यारतन आसी - एक परिचय खालिद हुसैन 11

ग़लत सब दलीलें ग़लत सब हवाले	17
ज़माने भर में बहुत मोतबर उजाला है	19
ना आशना-ए-दर्द-ए-दिल-ए-बेकरार लोग	20
हम पर निगाह ए लुत्फ़ कभी है कभी नहीं	22
गाफ़िल हूँ, तिरि याद से, ऐसा तो नहीं है	23
ज़रा सा आदमी हूँ	25
न रुसवा इस तरह करते बुला कर मुझ को महफ़िल में.....	27
पिए जाता हूँ, साक़ी की नज़र से!	28
लोग जो दिल फ़िगार होते हैं	30
ये हा, हा, कार कुछ है?	32
उठाया ही नहीं जाता जो बार-ए-ज़िन्दगी हम से!	34
नाख़ुदा की मुश्किलें, आसान कर जाता हूँ मैं	35
यह बहारें, यह चमन, यह आशियाँ मेरे लिए	37
बे हाल से हम क्युं रहते हैं, क्युं चाक है दामन, क्या कहिए.....	38
नासाज़ी-ए-हालात ने दिल तोड़ दिया है!	39
तलख़ी-ए-अय्याम रहन-ए-जाम की!	40
इम्तियाज़-ए-बेश-ओ-कम से दूर है!	41
आप नाहक़ मलाल करते हैं!	42
इस तरह दिल को बे-आसरा छोड़ कर!	43
कमी आने न पाए ऐ फ़लक कुछ ज़ौर-ए-पैहम में.....	44
कभी मैं ने उन्हें, पूछा नहीं है!	46
रात है, चाँद है, सितारे हैं!	48
भला चाहेगा, कोई क्या किसी का	49

ज़िन्दगी के मारे लोग / 7

हम हैं तूफान-ए-हवादिस से गुजरने वाले	50
ज़िन्दगानी जब हमें रास आणी!	51
तेज़ रफ़्तारियां	53
कभी रंज-ओ-ग़म, कभी बे-कसी है!	55
सुब्हो दम का मज़ा नहीं लेते	56
मसरत चीज़ क्या है रंज क्या है?	58
ख़्वाब ज़नत के हैं बे महल दोस्तो!	60
सौ सज़िशें हैं पिनहाँ पर्दा-ए-दोस्ती में!	62
हमें नफ़रत है ऐसी ज़िन्दगी से!	63
किसी के रँज-ओ-ग़म में जो बशर शामिल नहीं होता.....	64
दिल लगा बैठा हूँ उस अय्यार से!	65
रात अच्छा लगा!	67
मुफलिसों पर जब कभी आया शबाब!	69
तुम को चाहा तुम को पूजा!	71
कभी तसर्की कभी आज़ार भी है!	73
नाला-ए-दिल राएगाँ देखिए तब तक रहे	74
इस तरह के लुत्फ़ से कोई कहाँ तक शाद हो?.....	75
और मुश्किल ये आ पड़ी हम पर	76
फिर परीशां हाल है क़लब-ओ-जिगर क्या कीजिए.....	77
मौजों से टकराए हैं हम तूफ़ानों से खेले हैं	79
मिरी दुनिया-ए-दिल ज़ेर-ओ-ज़बर है	80
ग़म में इक लुत्फ़-ए-शादमानी है!	81
चारा-ए-दर्द-ए-निहाँ बन कर रहे	82
शौक़ दिल में, और लब पर ख़ामशी भी चाहिए.....	83
जब उनकी याद आई, बे-इख़्तियार रोए	84
सर पे आई जो आफ़त वो टल ही गई	85
ग़म-ए-दुनिया किसी की याद हसरत मौत की यारो.....	86
हासिल हमें भी क्रुरबतें थीं आप की कभी	88
जो भी है फ़रियादी है	90
आरजू-ए-क्रार, कौन कर	91
और किस तरह ज़िन्दगी करते	93

हमदर्दी जतलाने वाले	94
इक ज़माना था !	96
जुनूँ की हदें फाँदना चाहता हूँ	98
बैठे हो सर-ए-राहगुज़र क्यूँ नहीं जाते	100
ये तो नहीं है, हम अच्छे फ़नकार नहीं	101
रहे हैं पाएमाल-ए-गर्दिश-ए-हफ़्त आसमाँ बरसों	102
तिनका तिनका नज़र नहीं आता	103
दर्द वाले हो तो फिर ऐसा करो	104
दोस्त ही दुश्मन अगर हो जाए तो	106
मैं कि किस किस से आशना न हुआ	107
क्यूँ न हम आज हक़ीक़त ही बता दें अपनी	109
चन्द लोगों ने ज़िन्दगी की है	111
कौन से हम मर गुज़रे हैं	112
बेदाद गर हुआ कि कोई बेवफ़ा हुआ	114
जहाँ अपना बसाया जा रहा है	116
जिस से मिट जाए वक़ार-ए-ज़िन्दगी	117
ज़िन्दगी ख़ैर हमको रास नहीं	118
उन को माइल-ब-जौर-ओ-जफ़ा देख कर	119
बेकिए की सज़ा मैं क्यों झेलूँ	121
हमने उनके ऐहद-ओ-पैमाँ की हक़ीक़त देख ली	122
चारा है ग़म-ए-ज़ीस्त का जान गए हम	123
क्या बताएँ तुम को हम क्या हो गए	124
राह नहीं थी इतनी मुश्किल	126
फूँक रहा था मेरा घर	127
खुल ही जाए भला या बुरा कौन है	128
तेरी शफ़क़त के साए साए हैं	129
किसको किसका है आसरा मालूम	131
वो भूलता थोड़े ही है !	133
सुन भी लेते वो दास्ताँ मेरी !	135
भला हूँ या बुरा, हूँ ना !	137
इतनी दिलक़श होगी दुनिया मेरे बाद !	139

मैं जब से बे-ज़रूरत हो गया हूँ	140
आप ही के नहीं	142
क्या कहा, ज़िन्दगी	144
पहले खुद को, फिर उस के बाद, तुझे	146
घर से ऐसा गया	147
रास्ता मुखासर नहीं होता	148
एक दिन सारे नशे उतर जाएँगे	150
क़तए	151

पं. विद्यारतन आसी - एक परिचय

गलत सब दलीलें, गलत सब हवाले
अंधेरे अंधेरे, उजाले उजाले
हजारों थे दुनिया में, इखलास वाले
मगर गर्दिश-ए-वक्त ने पीस डाले

यह दोनों शेयर पं. विद्यारतन आसी की शख्सीयत को उभारते हैं और पाठक को इस बात के लिए मजबूर करते हैं कि वो आसी की ज़िन्दगी में झाँकने की कोशिश करें। कुछ लोग नार्कदा गुनाहों के लिए दुनिया की नज़रों में पापी या गुनाहगार बन जाते हैं और आसी कहलाते हैं... और फिर ज़िन्दगी के दशत में अकेले टुण्ड-मुण्ड दरख्त की तरह अपनी ही तन्हाई में झुलस जाते हैं। उनकी आत्मकथा में नसीब सोया रहता है लेकिन ज़मीर जागता है। ज़िन्दगी उन्हें उदासियों और महरूमियों की सौगात देती है। महरूमियों का यही एहसास उनको हस्सास बना देता है। ऐसे ही लोगों में मेरा शायर दोस्त पंडित विद्यारतन आसी भी है, जिसने अपने लाशऊर में ज़िन्दगी के कड़वेपन को पाला है-

दुनियादारी निभा तो सकते थे,
दिल ही सीने में दूसरा न हुआ,

या फिर

दरहम-ओ-बरहम है नज़्म-ए-ज़िन्दगी
ऐ ग़म-ए-दौरां तेरा ख़ाना ख़राब।

अपनों की हिकारत और नफरत के कारण जब आसी के लिए इन्सानी रिश्ते अज़ाब बन गए, तो वो कह उठा-

जैसे माहौल में जिए हम लोग
आप होते तो खुदकुशी करते,

या फिर-

अभी कोई सितम टूटा, अभी कोई बला टूटी
रहा जब तक मैं जिन्दा, बस यही ख़दशा रहा दिल में

माँ-बाप की मौत के बाद जब आसी को अपनों के सहारे की जरूरत थी, तो अपनों ने ही उसे ठुकरा दिया और बेगाने अपने बन गए जिन्होंने आगे बढ़कर आसी को थाम लिया। इन नए रिश्तों की गरमाहट में आसी जीने लगा और कारोबार-ए-जिन्दगी करने लगा। यह भला उन अपनों को कैसे बरदाश्त होता। आसी पर तोहमतें लगने लगीं, वो बेचैन हो उठा और कहने लगा-

मुफ़लिसों पर जब कभी आया शबाब
घड़ लिए दुनिया ने किस्से बेहिसाब

उसकी शादी हुई। शादी ने खुशियों के बदले ग़म दिए, तकलीफें दी, मलामतें दी। आसी साल-हा-साल तक शादी के बन्धन की अर्थी उठाए अदालतों में ख़्बार होता रहा, रिश्तों की सूली चढ़ता रहा। आखिर यह अर्थी जल कर राख़ हुई लेकिन आसी की जिन्दगी मुस्सलसल उसके कन्धों का बोझ बन्नी रही। उन सियाह रातों और उदास दिनों में आशा की एक किरण दबे पाँव आसी के आँगन में उतरी और उसकी आसेबज़दा जिन्दगी में कुछ पल के लिए उजाला करने उसके साथ चन्द कदम चली। आसी के दिल में उसके लिए बहुत इज़्ज़त और मुहब्बत है।

विद्यारतन आसी का नसीब ख़ूबसूरत ना रहा हो, लेकिन उसका हुस्न और जवानी कभी क़ाबिल-ए-रशक़ रहे हैं। मशहूर पंजाबी शायर शिव कुमार बटालवी की यह पंक्तियाँ उस पर पूरी उतरती हैं-

इक ओहदे रूप दी धुप्प तिखेरी
दूजा महकाँ दा तिरहाया,
तीजा ओहदा रंग गुलाबी,
ओ किसे गोरी माँ दा जाया...

जिन्दगी के 80 बरस गुज़ारने के बावजूद आसी का रंग आज भी गुलाबी है, आँखें नीली हैं लेकिन उन आँखों में सियाहबख़्ती का दर्द साफ़ दिखाई देता है।

पं. विद्यारतन आसी जम्मू के मुहल्ला चौगान सलाथिया में 11 जुलाई, 1938 को पैदा हुआ। पिता का नाम पं. शंकर दास था। बचपन गुरबत में बीता और जवानी

जिन्दगी के मारे लोग / 12

पर किस्मत ने काली सियाही थोप दी। सारा जीवन उलझनों को सुलझाने में गुजर गया, फिर मसले और उलझने ही उसकी ज़िन्दगी बन गए। ज़माने के तलख तजुबे ही उसकी रचनात्मक प्रक्रिया का हिस्सा बने। आसी की ग़ज़लों में उस पीड़ा की छाप साफ़ झलकती है। उसकी शायरी ज़िन्दगी की सच्चाईयों की अक्कासी करती है। उसके शेयर समाज के रिसते नासूर का मुखौटा उतारते हैं-

सारी हमदर्दियाँ दिखावे कीं
यार लोगों का हौसला मालूम
जीने, जीने में फर्क होता है,
यह हक़ीकत सभी को क्या मालूम

आसी की ग़ज़लें असल में उसकी आत्मकथा है। इन ग़ज़लों में अदब और ज़िन्दगी का हसीन मिश्रण है। सीधी-सादी ज़बान में बड़ी और गहरी बात कहने का सलीका उसकी ग़ज़लों की खास पहचान है-

आप क़ाबिल तो हैं
दोस्ती के नहीं
हर तरफ़ बस्तियाँ
घर किसी के नहीं
दिल से मिलते हैं दिल
हर किसी के नहीं

दूसरी जगह आसी कहता है-

किस-किस को मुजरिम ठहराएँ
कौन नहीं है अपना क़ातिल
वादा करना और निभाना
कितना आसां, कितना मुश्किल
आसी जब डूबे तो जाना
दरिया दरिया साहिल साहिल

आसी की ग़ज़लों में नरमगी है। उसका ज़ाति क़र्ब उसका तख़लीकी क़र्ब बन जाता है। यही वजह है कि उसके शेयर अक्सर पढ़ने और सुनने वालों के दिलों

पर नक्श छोड़ जाते हैं।

पं. विद्यारतन के रोज़गार का रिश्ता अवतार किशन पुरी के साथ इक लम्बे अरसे तक जुड़ा रहा जो, पी-मार्का तेल की फर्म देवीदास गोपाल कृष्ण के मालिक थे। अवतार किशन पुरी ने आसी की हर तरह से दिलजोई की, उसकी भरपूर इमदाद की, और आखिरी दम तक उसके सर पर शफ़क़त का हाथ रखा।

जम्मू युनिवर्सिटी के उर्दू विभाग के साबका सदर मरहूम डॉ. शामलाल कालरा के साथ आसी के पुराने सम्बन्ध थे। डॉ. कालरा खुद भी बहुत अच्छे उर्दू शायर और आलोचक थे और आबिद पेशावरी के क़लमी नाम से लिखते थे। आसी उन्हें अक्सर अपनी ग़ज़लें सुनाया करते। आबिद पेशावरी उनकी ग़ज़लों को ज़ियादा पुरअसर बनाने के लिए मुफीद मशवरे भी दिया करते। आबिद पेशावरी की यादाश्त ग़ज़ब की थी। जब आसी की बियाज़ (पाण्डुलिपि) गुम हो गई तो वो बहुत उदास हो चुका था लेकिन आबिद पेशावरी ने आसी की हिम्मत बढ़ाई और वो आसी की ग़ज़लों से एक आध शेयर दोहराते और आसी को पूरी ग़ज़ल याद आ जाती। इस तरह गुमशुदा बियाज़ दोबारा तैयार हुई। शायद आबिद पेशावरी मरहूम की सोहबत का ही असर है कि आज 80 साल की उम्र में भी आसी को अपना सारा क़लाम ज़बानी याद है।

ब्रिज नन्दन शर्मा के साथ आसी का एक ऐसा रिश्ता था जिसे कोई नाम नहीं दिया जा सकता। वो आसी के बचपन का दोस्त था उसकी ज़िन्दगी का हमराज़। आसी के लिए महफ़िलें सजाना और उसको कवि दरबारों में ज़बरदस्ती ले जाना उसकी दोस्ती का सुबूत था। उर्दू के एक और बुजुर्ग शायर तालिब ऐमनाबादी ने भी आसी के कलाम को ख़ूब से ख़ूबतर बनाने में अपना हिस्सा अदा किया। अर्श सहबाई तो आसी के उस्ताद हैं। शायरी के इब्तदाई सबक आसी ने अर्श सहबाई से ही लिए हैं।

आसी ने आपनी तालीम ज़िन्दगी की पाठशाला से हासिल की है किसी स्कूल, कॉलेज या युनिवर्सिटी से नहीं। वो पंडित है मगर कबीर के इस दोहे के हवाले से-

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय

आसी ने भी अढ़ाई अक्षर प्रेम के पढ़े और अपनी शायरी में इस्तेमाल किए।

यह और बात है कि यह प्रेम अक्षर उसे जाति जिन्दगी में रास न आए-

तेरी शफ़क़त के साए, साए हैं
यह अलग किसको रास आए हैं
रस्म-ए-दुनिया निबाहने के लिए
लोग जबरन भी मुस्कुराए हैं

आसी मज़हबी बुनियादपरस्ती, फिरकापरस्ती और नसलपरस्ती की वजह से मुल्क में फैली बदअमनी से बहुत दुखी है। वो कहता है कि इन मज़हबी और सियासी ठेकेदारों ने ऐसे हालात बना दिए हैं कि अच्छी सच्ची सोच वाले बेबस दिखाई देते हैं-

जिससे बढ़ जाएं दिलों की दूरियाँ
ऐसे मज़हब को हमारी बंदगी,

इतने शैदाई हैं गीता कुरान के
गीता कुरान की मानता कौन है

मरकज़ फित्नासाज़ों के
मंदिर मस्जिद गिरिजाघर

आसी की ग़ज़लें दिल में बसेरा करने वाली हैं। इनको पढ़िए और लुत्फ उठाइए।

आखिर में मैं अपने दोस्त और पंजाबी के मशहूर शायर सतीश गुलाटी का शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने आसी की शायरी को देवनागरी में लिप्यांतर करवाया और छापने का बीड़ा उठाया।

- ख़ालिद हुसैन

सज़ा के तौर सुनना
मगर बाग़ौर सुनना
अगर कुछ लुत्फ़ आए
मुझे फिर और सुनना



ग़लत सब दलीलें ग़लत सब हवाले
अन्धेरे अन्धेरे उजाले उजाले

मिरे हाल पर फबतियां कसने वाले
मुबादा तुझे फूंकदे मेरे नाले

हमें जान-ओ-दिल से वो अपना बना ले
मगर हम कहाँ ऐसी तक्रदीर वाले

मुझे वाज़ पर वाज़ फ़रमाने वाले
अगर कोई तेरी भी नींदें चुरा ले

हज़ारों थे दुनिया में इखलास वाले
मगर गर्दिश-ए-वक़्त ने पीस डाले

रहे ज़िन्दगी में बजा सैई-ए-पैहम
मुक़द्दर का लिक्खा मगर कौन टाले

मुहब्बत पे तेरा ये अहसान होगा
मुहब्बत में जी से गुज़र जाने वाले

उधर महकी महकी फ़िज़ा-ए-मुहब्बत
इधर ज़हन पर चन्द यादों के जाले

हकीक़त हमेशा हकीक़त रहेगी
हकीक़त पे पर्दे कोई लाख डाले

मुहब्बत की नैरंगियां तौबा-तौबा
कहीं रातें रौशन कहीं दिन भी काले

कोई दम के मेहमाँ हैं ऐ ज़िन्दगी हम,
जहाँ तक तुझे रास आना है, आ ले

अगर मेरी हस्ती खटकती है तुझ को
तो ले डूब जाता हूँ ऐ ना-ख़ुदा ले

किसी जान-ए-जाँ की अमानत हैं आसी
यह अश्कों के तूफ़ाँ ये आहें ये नाले





जमाने भर में बहुत मोतबर उजाला है
ये देखना है मगर किस के घर उजाला है

हुआ न सामना दोनों का इत्तफाकन भी
अन्धेरा है भी कहीं बे-खबर उजाला है

मिरी इस अदना सी जुरत की कोई दाद तो दे
गो फूँक कर ही सही घर मगर उजाला है

सुग़ा-ए-मन्ज़िल-ए-हस्ती मिले, मिले न मिले,
यही बहुत है मिरा राहबर उजाला है

ये क्या मुक़ाम है आसी जहाँ हूँ सदियों से,
इधर अन्धेरा है मेरे इधर उजाला है





ना आशना-ए-दर्द-ए-दिल-ए-बेकरार लोग
क्या जानें आबरू-ए-गम-ए-इन्तज़ार लोग

तस्कीन-ए-दिल के वास्ते होते न ख़्बार लोग
ऐ काश जानते तिरे ग़म का वक्रार लोग

नज़रें बचा के चलते हैं बेगाना वार लोग
इक पल में भूल जाते हैं बरसों का प्यार लोग

इन के दिलों में अब वह मुहब्बत नहीं रही
कितना बदल गए हैं ईलाही ये यार लोग

बरसों की रस्म-ओ-राह का तोड़ें न यूँ भरम
यूँ बे-ताल्लुकी न करें इख्तियार लोग

हर इक सुखन है तन्ज का पैहलू लिए हुए
बदले ये कब के लेने लगे मुझ से यार लोग

इन की तस्सलियाँ न किसी काम आ सकीं
मुझ को बचा सके न मिरे गम गुसार लोग

हमने किया जो जौर-ए-मुसल्लसल का शुक्रिया
अपने किए पे आप हुए शर्मसार लोग

इक बेवफ़ा की याद से उलझा हुआ है। दिल
छेड़ें न आज ज़िक्र-ए-गम-ए-रोज़गार लोग

आएगी जब कभी इन्हें आसी हमारी याद
रोएंगे फूट फूट कर दीवाना-वार लोग

●



हम पर निगाह-ए-लुत्फ कभी है कभी नहीं
तुम ही कहो ये क्या है अगर दिल्लगी नहीं

गो जी रहा है आज भी कोई तिरे दार
लेकिन यह ज़िन्दगी तो कोई ज़िन्दगी नहीं

उस की बला से कोई जिए या कोई मरे
जिस को किसी के दर्द का अहसास ही नहीं

दिल में न आरजू है कोई अब न वलवला,
इक शमा जल रही है मगर रौशनी नहीं

आखिर हम उनके वादों पर ईमान लाएँ क्या,
जो हम पे मेहरबान अभी हैं अभी नहीं

इस गुफ्तगू की तर्ज में तरमीम कीजिए,
कब तक मैं ख़ामशी से सुनूँ आपकी नहीं

आसी जुबान-ए-ख़ामशी में दास्तान-ए-शौक्र
हम ने कही है बारहा उस ने सुनी नहीं





गाफ़िल हूँ तेरी याद से ऐसा तो नहीं है
हर वक़्त मेरे दिल में तेरी याद मकीं है

दुनिया-ए-मुहब्बत बड़ी दिलकश है हसीं है
हर एक को रास आए, ज़रूरी तो नहीं है

माना कि ज़माने का हर इक नक़्श हसीं है
इस पर भी ज़माने में कोई तुझसा नहीं है

इक अरज़-ए-तम्मना के सिवा हमने किया क्या
किस बात पे वह शोला बदन चीं-ब-जबीं है

क्या खाक हो मेरे दिल-ए-बेताब का दरमां!
जब मुझ पे तिरी चश्म-ए-तव्वजो ही नहीं है

दिल में है अगर जज़्बा-ए-इख़लास-ओ-मुहब्बत
वह खुद ही खिंचे आएंगे, यह मेरा यकीन है

क्या कहिए मुहब्बत में अजब हाल है अपना
नज़रें हैं, कहीं और तो दिल और कहीं है

रह रह के खटकता है जो हर सांस में पैहम !
सीने में कोई ख़ार है या क़लब-ए-हज़ी है

इक़रार-ए-वफ़ा कर भी चुकीं तेरी निगाहें !
अफ़सोस तिरें लब पे मगर फिर भी नहीं है

उस बुत का कोई अहद भी ईफ़ा नहीं होता !
क्या उसका यकीन जिस का न ईमाँ है न दी है

क्या तुरफ़ा क़यामत है मिरी वजह-ए-तबाही
वह पूछते हैं और, मुझे याद नहीं है

वो ख़्वाब तेरी चाह जिसे कहती है दुनिया !
ताबीर ख़ुदा जाने मगर ख़्वाब हसीं है

शरमिंदा-ए-ऐहसां मैं नहीं राहनुमा का !
आसी मेरा रहबर तो मिरा अज़म-ओ-यकीन है

●



ज़रा सा आदमी हूँ
बला का आदमी हूँ

कहा ना आदमी हूँ
सुना क्या आदमी हूँ

कहां का आदमी हूँ
मैं दिखता आदमी हूँ

तिरे ही फ़ज़ल से मैं,
खुदाया आदमी हूँ

न ज़िन्दा हूँ न मुर्दा,
डरा सा आदमी हूँ

मुझे क्या ज़ाब्तों से
मैं घर का आदमी हूँ

खुदा वाले तो तुम हो
मैं सीधा आदमी हूँ

निहायत कम हूँ इन्साँ
ज़ियादा आदमी हूँ

जुबां, किरदार, कुच्छ है
मैं कैसा आदमी हूँ

यह दो ही सूरतें हैं,
खुदा या आदमी हूँ

कभी मिल कर तो देखो
मैं अच्छा आदमी हूँ

मगर बा-होश मिलना!
मैं ज़िन्दा आदमी हूँ

न आदी, अन्त मेरे!
अजन्मा आदमी हूँ

सिवाए सब्र आसी
करूं क्या आदमी हूँ

●



न रुसवा इस तरह करते बुला कर मुझ को महफ़िल में
अगर पास-ए-वफ़ा होता, ज़रा भी आप के दिल में

न अब वह वलवले बाक़ी, न अब वह हौसले दिल में
मिरा होना न होना एक है दुनिया की महफ़िल में

हवादिस से है निसबत ख़ास ऐसे ज़िन्दगानी को!
है क़ायम रब्त-ए-बाहम जिस तरह दरिया-ओ-साहिल में

बड़ी मुद्दत से यह आलम, न जीता हूँ न मरता हूँ
बड़ी मुद्दत से मेरी ज़िन्दगी है सख़्त मुश्किल में

अभी कोई बला टूटी अभी कोई सितम टूटा!
रहा जब तक मैं ज़िंदा इक यही ख़दशा रहा दिल में

मिरी हस्ती की कश्ती का ठिकाना ही नहीं कोई!
अभी आगोश-ए-तूफ़ां में अभी आगोश-ए-साहिल में

तुम्हीं सोचो मेरा जीना कोई जीने में जीना है!
न कोई आरजू दिल में न कोई मुद्दआ दिल में

सफ़ीना ज़िन्दगी का नज़र-ए-तूफ़ां कर दिया आसी!
तुझे आख़िर ये क्या सूझी ये क्या आई तिरे दिल में





पिए जाता हूँ, साक्री की नज़र से!
मुझे क्या गर्दिश-ए-शाम-ओ-सहर से

मुनासिब है गुरूर-ए-हुस्न लेकिन!
उतर जाएगा यह सौदा भी सर से

ये किन बीते दिनों की याद आई?
ये कैसे अशक टपके चश्म-ए-तर से

बहुत मुश्शाक़ होगा रहज़नी में!
किसे थी यह तव्वक्रो राहबर से

सितम ढाकर हमारे दिल पे अक्सर
जमाना खुद गिरा अपनी नज़र से

तिरे जलवों की ताबानी का आलम,
कोई देखे ज़रा मेरी नज़र से

किसी की मस्त आँखों के तसद्दुक!
यकीं उठने लगा है मौत पर से

तुम्हें चाहूँ तो किस बिरते पे चाहूँ?
तुम्हें देखूँ तो देखूँ किस नज़र से

कदम रक्खा जहां अहल-ए-जुनूँ ने
कई तूफ़ान उठे उस रह गुज़र से

बहुत बिगड़े हुए हैं उन के तेवर!
नज़र आता है ये उनकी नज़र से

भरी महफ़िल में इज़हार-ए-मुहब्बत?
ये लगज़िश और फिर मेरी नज़र से

उठाए मौत ही फिर उन को आसी
गिरा देते हैं वो जिन को नज़र से

•



लोग जो दिल फ़िगार होते हैं
चलते फिरते मज़ार होते हैं

जो मुहब्बत में ख़्वार होते हैं
साहिब-ए-सद वक्रार होते हैं

जिनके दामन में ख़ार होते हैं
क़द्रदान-ए-बहार होते हैं

जो मुहब्बत शिआर होते हैं
साजिशों का शिकार होते हैं

मेरी बरबादी-ए-मुहब्बत पर,
आप क्यूँ शर्मसार होते हैं

उनके क्रौल-ओ-क्रार क्या कहिए,
सिर्फ क्रौल-ओ-क्रार होते हैं

अपना मतलब निकालने वाले,
किस क्रदर होशियार होते हैं

पुर खुलूसों की पूछते क्या हो,
ख्वार होते थे ख्वार होते हैं

क्या खबर थी कि रह-ए-उलफ़्त में,
हर क्रदम खारज़ार होते हैं

किस तव्वक्रो पे लोग ऐ आसी
ज़िन्दगी पर निसार होते हैं

●



ये हा, हा, कार कुछ है?
ग़लत सरकार कुछ है

सियासत, यार कुछ है?
वतन से प्यार कुछ है

मुहब्बत, प्यार कुछ है?
हमें दरकार कुछ है

ये इस उस पार कुछ है?
मज़ा मंज़दार कुछ है

कहीं इसरार कुछ है!
उफ़्फ़ के पार कुछ है

दवा, तीमार कुछ है!
मुझे आज़ार कुछ है

न तुम वो हो न मैं हूँ
समय की मार कुछ है

किसे तेरी ख़बर दूँ?
कहीं घर बार कुछ है

दिलों में रब्त-ए-बाहम!
अगर दुशवार कुछ है

सुकुं से, चैन से हूँ!
यक़ीनन हार कुछ है

मुहब्बत, और आसी?
पस-ए-दीवार कुछ है

•



उठया ही नहीं जाता जो बार-ए-ज़िन्दगी हम से!
किनारा कर चुकी शायद किसी की याद भी हम से

कभी मानूस थी कितनी, बहार-ए-ज़िन्दगी, हम से,
मगर दामन कशाँ है आजकल हर इक खुशी हम से

शब-ए-ग़म इस तरह भी कट गई है बारहा अपनी,
किसी की याद पहरों गुफ़्तगू करती रही हम से

किसी के वास्ते तरक-ए-ताल्लुक, मशग़ला ठहरा,
हमारे दिल पे जो गुज़री है वो पूछे कोई हम से

किसी को शाद कामी है! किसी को ना मुरादी है!
मिलेंगे राह-ए-उलफ़त में, कई तुम से कई हम से

तिरी चश्म-ए-क्रम की वो तव्वजो ही नहीं वरना,
कहां थी इस क्रदर बरहम हमारी ज़िन्दगी हम से

बसा औक्रात हम ने मैकदे के दर पे दस्तक दी,
तबीयत जब किसी सूरत न बहलाई गई हम से

कहां तक, खुद फ़रेबी में रहें हम मुब्तला आसी
लबों पे लाई जा सकती नहीं झूटी हंसी हम से





नाखुदा की मुश्किलें, आसान कर जाता हूँ मैं
अपनी कश्ती आप जब तूफ़ाँ से टकराता हूँ मैं

इनका हर इक कौल अकसर बेअमल पाता हूँ मैं
नासहों की बात को खातिर में कब लाता हूँ मैं

किस क्रदर है, नारसा, मेरा मुक़द्दर देखिए,
ऐन मंज़िल के करीब आ कर भटक जाता हूँ मैं

हर बला-ए-नागहाँ, मेरा मुक़द्दर बन गई,
हर बला से खुद को अब महफूज़तर पाता हूँ मैं

जब मुहब्बत जान थी, ईमान थी, वो दिन गए
अब मुहब्बत के तसव्वुर से भी घबराता हूँ मैं

बे तिरे जो कुछ गुज़रती है मिरे दिल पर न पूछ!
ज़िन्दगी को मौत के नज़दीकतर पाता हूँ मैं

मैं तिरी बातों में आ कर बे सर-ओ-सामाँ हुआ,
अब मगर ऐ दिल तिरी बातों में कब आता हूँ मैं

मुद्दतें गुज़रीं कि दिल ने की थी, उन की आरजू!
आज तक दश्त-ए-तलब में ठोकरें खाता हूँ मैं

ज़िन्दगी में रंग-ओ-बू ने किस क्रदर धोके दिए!
इस पे भी आसी फ़रेब-ए-रंग-ओ-बू खाता हूँ मैं

●



यह बहारें, यह चमन, यह आशियाँ मेरे लिए
सर-ब-सर साबित हुए आज़ार-ए-जाँ मेरे लिए

पूछते क्या हो, दिल-ए-बेखानुमां की दोस्तो
इक मुसीबत है दिल-ए-बेखानुमां मेरे लिए

अब तबीयत मुश्किलों से इस क्रदर मानूस है
फ़स्ल-ए-गुल से कम नहीं दौर-ए-ख़िजाँ मेरे लिए

चल दिया जब नाखुदा तूफ़ाँ में मुझको छोड़कर
बन गई साहिल हर इक मौज-ए-रवाँ मेरे लिए

कौन सी है वो मुसीबत मुझ पे जो टूटी नहीं?
रात दिन गर्दिश में हैं हफ़्तआस्माँ मेरे लिए

लाख हूँ बे-वस्फ़, लेकिन मुद्तों याद आऊंगा!
मुद्तों दुनिया रहेगी नोहा ख्वां मेरे लिए

मैंने आसी तर्क कर दी ज़िन्दगी ये सोच कर!
क्यूँ सहे यह हर बला-ए-नागहाँ मेरे लिए





बे हाल से हम क्यों रहते हैं, क्यों चाक है दामन, क्या कहिए
ये जोग लिया है बरसों से हम ने किस कारन क्या कहिए

ऐ मंजिल-ए-हक के दीवानो कुछ सोच करो कुछ कर गुज़रो
क्या जाने कब क्या कर गुज़रे ये वक्त का रावण क्या कहिए

इक वो भी आलम थाकि तिरी पलभर की जुदाई डसती थी,
अब सोच है क्यों कर काटेंगे पर्वतसा ये जीवन क्या कहिए

ज़ख्मों पे ज़ख्म भी खाता है इसपर भीये कब बाज़ आता है,
फिर प्यार के नगमे गाता है इस दिल का लड़कपन क्या कहिए

जब याद किसी की आई है हम खून के आँसू रोए हैं!
ऐ आसी यूँ भी आँखों से बरसा है सावन क्या कहिए





नासाज़ी-ए-हालात ने दिल तोड़ दिया है!
दुनिया की हर इक बात ने दिल तोड़ दिया है

कुछ साक्री-ए-महफ़िल भी रहा रिंदों से बरहम
कुछ शिद्दत-ए-आफ़ात ने दिल तोड़ दिया है

आगाज़-ए-मुलाक़ात में क्या जोश था दिल में
अन्जाम-ए-मुलाक़ात ने दिल तोड़ दिया है

बेहाल-ओ-परीशान है बशर, रोज़-ए-अज़ल से
फ़रसूदा रवायात ने दिल तोड़ दिया है

अपनों की अनायात का हम ज़िक्र करें क्या?
अपनों की अनायात ने दिल तोड़ दिया है

कल आप की हर बात से, तसकीन मिली थी
आज आप की हर बात ने दिल तोड़ दिया है

हम तिश्ना दहन बैठे हैं मैख़ाने में आसी!
उमड़ी हुई बरसात ने दिल तोड़ दिया है





तलखी-ए-अय्याम रहन-ए-जाम की!
बादा खाने में बसर हर शाम की

बज़्म में साक्री की चश्म-ए-मस्त ने!
शर्म रख ली एक तिश्ना-काम की

काश सुन लेते वह मेरी दास्ताँ!
बात रह जाती दिल-ए-नाकाम की

मिट न पाई ज़िन्दगी की तलखियाँ,
बादानोशी हमने गो हर शाम की

हम कहाँ थे इस क्रदर बे नंग-ओ-नाम!
दोस्तो गर्दिश है सुब्ह-ओ-शाम की

बादा ख़्वारों ने न चलने दी कोई,
मयकदे में गर्दिश-ए-अय्याम की

इस निगाह-ए-मुख़ासर का शुक्रिया
बात बन आई दिल-ए-नाकाम की

आसी-ए-कमज़र्फ़ ने हंगाम-ए-मै!
अंजुमन की अंजुमन बदनाम की





इम्तियाज़-ए-बेश-ओ-कम से दूर है!
दिल मुहब्बत के नशे में चूर है

गम उठा कर भी बड़ा मसरूर है!
किस क्रंदर सादा दिल-ए-रंजूर है

एक मुश्त-ए-खाक है इस का वजूद!
आदमी किस बात पर मगरूर है

इस के आगे, एक भी चलती नहीं,
दिल के हाथों हर कोई मजबूर है

हुस्न को गो नाज़ है खुद पर मगर,
इश्क भी अपनी जगह मगरूर है

हज़रत-ए-आसी की बाबत क्या कहें?
शायर अच्छा है मगर मगरूर है





आप नाहक मलाल करते हैं!
मुफ्त जी को नढाल करते हैं

जिन्स-ए-इखलास इस ज़माने में,
आप भी क्या कमाल करते हैं

माइल-ए-लुत्फ थे जो कल, हम पर
आज जीना मुहाल, करते हैं

आप मिलते हैं जब कभी हम से,
लोग लाखों सवाल करते हैं

बे-पिए मय हराम होती है
रिन्द पी कर हलाल करते हैं

आप ज़िन्दा हो किस तरह आसी
दोस्त अक्सर सवाल करते हैं





इस तरह दिल को बे-आसरा छोड़ कर!
हम कहां जाएं दर आप का छोड़ कर

क्या भरोसा मरीज़-ए-गम-ए-इश्क का!
कुछ दुआ कीजिए अब दवा छोड़ कर

यूं भी होता है? अपनों से बदज़न कोई!
यूं भी जाता है कोई भला छोड़ कर

मौज-ए-तूफ़ाँ ने बड़ कर सहारा दिया
चल दिया जब मुझे नाखुदा छोड़ कर

बादा ख़ाने में रुसवाईयां ही सही!
कौन जाए यह रंगीं फ़िज़ा छोड़ कर

मुद्दतों याद करता रहेगा जहां!
मिट चले हम तो नक्श-ए-वफ़ा छोड़ कर

अहल-ए-दुनिया ने आसी बहुत कुछ दिया
एक जिन्स-ए-ख़लूस-ओ-वफ़ा छोड़ कर





कमी आने न पाए ऐ फ़लक कुच्छ जौर-ए-पैहम में
बहुत है ताक़त-ए-बरदाश्त-ए-ग़म, आज भी हम में

कमी आई है जब से तेरे मेरे रब्त-ए-बाहम में!
भटक कर रह गई है ज़िन्दगी तारीक़ी-ए-ग़म में

हुई हैं अन्जुमन में जब भी उस काफ़िर से चार आंखें
कही है दास्तान-ए-ग़म जुबान-ए-चश्म-ए-पुरनम में

ग़नीमत है वह मेरी बेकसी पर मुस्कुराए हैं,
किसी का कौन होता है, वग़रना ऐसे आलम में

उठा ही चाहता है अब जनाजा आरजूओं का
बुझा ही चाहती है शम-ए-हस्ती अब कोई दम में

यही ले दे के अब तो रह गया है, अपना सरमाया,
जो आंसू देखते हैं आप मेरी चश्म-ए-पुरनम में

न वो मेरे, न दिल मेरा, न अदना सी खुशी मेरी!
यह मेरा हौसला है जी रहा हूँ ऐसे आलम में

अगर ऐ आसमां आह-ओ-फ़ुगां पे हम उतर आए,
बदल जाएगी तेरी सारी दुनिया बज़्म-ए-मातम में

कहीं नाम-ओ-निशां तक मिल न पाएगा मुस्सरत का
कहां तक साथ मेरा दे सकोगे जादा-ए-ग़म में

हयात-ए-मुख्तसर की क्या कहें रूदाद हम तुझ से,
खुलासा यह कि गुज़री है परेशानी के आलम में

अबस उम्मीद ऐ आसी किसी से ग़म गुसारी की,
किसी को क्या गरज़ जो हो शरीक आकर तिरे ग़म में

●



कभी मैंने उन्हें, पूछा नहीं है!
उन्हें भी है मुहब्बत या नहीं है

इजाजत हो तो मैं ये अर्ज करदूँ
सलीका आप का अच्छा नहीं है

वही छाया हुआ है ज़िन्दगी पर
वो जिसको आज तक देखा नहीं है

सितम, आलाम, महरूमी, तबाही!
मिरी तकदीर में क्या क्या नहीं है

अभी कुछ और भी जौर-ओ-सितम हों
अभी सदमों से दिल टूटा नहीं है

न जाने किस घड़ी छिन जाए मुझ से,
ये ज़ालिम ज़िस्म भी मेरा नहीं है

मिरी तकदीर ही में ठोकरें थीं!
मुझे दुनिया से कुछ शिकवा नहीं है

अजब इन्सान है दुनिया में वो भी
सदा-ए-वक्त जो सुनता नहीं है

कहां रहते हो आसी आज कल तुम
कई दिन से तुझे देखा नहीं है

●



रात है, चाँद है, सितारे हैं
बेसहारों के सौ सहारे हैं

यार लोगों के दर्द क्या बांटू
मेरे अपने ही इतने सारे हैं

आप बाहर तलाशते हैं जिन्हें
मेरे अन्दर वो सब नजारे हैं

ज़िन्दगी तुम से हम नहीं हारे
अपनी कमज़ोरियों से हारे हैं

इक तकल्लुफ है मौत से मरना
हम सभी ज़िन्दगी के मारे हैं

और क्या होगा प्यार का करिश्मा
तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं

तीसरी आंख की ज़रूरत है
इस ज़मीं पर भी चाँद तारे हैं

जब से आज़ाद हम हुए आसी
फ़ितना साज़ों के वारे नयारे हैं





भला चाहेगा, कोई क्या किसी का
हो दुश्मन आदमी जब आदमी का

जफ़ा कारी है ज़िन्दा आप ही से!
जफ़ा कारी है शेवा आप ही का

मिरा शेवा है इखलास-ओ-मुहब्बत!
बुरा चाहूंगा मैं क्यों कर किसी का

खुदा का शुक्र है उस बे-वफ़ा ने!
बब पूछा है मेरी ख़ामशी का

तिरे दिल में भी हो दर्द-ए-मुहब्बत!
तिरा दिल काश हो जाए किसी का

दिलों में हसरत-ए-तख़रीब पिनहां!
लबों पे ज़िक्र सुलह-ओ-आशती का

यही मअराज है खुद आगही की!
न तोड़ो दिल ज़माने में किसी का

वही दुश्मन हुए हैं आज आसी!
जो दम भरते थे कल तक दोस्ती का





हम हैं तूफान-ए-हवादिस से गुज़रने वाले
हम नहीं मौज-ए-बलाखेज़ से डरने वाले

आप जी भर के दिल-ए-ज़ार पे बेदाद करें!
हम किसी तौर शिकायत नहीं करने वाले

काश तू दर्द-ए-मुहब्बत से शनाशा होता!
अहद-ओ-पैमान-ए-मुहब्बत से मुकरने वाले

फूल ही फूल नहीं इस में कई ख़ार भी हैं!
देख कर राह-ए-मुहब्बत से गुज़रने वाले

तेरी इस ख़ास अदा पर हूँ दिल-ओ-जां से निसार
मेरी आँखों से मिरे दिल में उतरने वाले

ऐसी तनज़ीम-ए-गुलिस्तां का ख़ुदा ही हाफ़िज़,
अब ये तिनके हैं किसी रोज़ बिखरने वाले

अब तो बेकार है हर सई-ए-मुसल्लसल आसी
अब नहीं गेसू-ए-हालात संवरने वाले



कौन ज़िन्दा रह सकेगा बिन तारे!
किस से ये तोहमत उठाई जाएगी

कौन जाने क्या हो फिर तौबा का हश्र!
मैकदे पर जब घटा घिर आएगी

एक दिन हम खाक में मिल जाएंगे!
हर हकीकत दास्ताँ बन जाएगी

क्या करूँ इन की नसीहत का गिला,
दोस्तों से और क्या बन आएगी

मैं न कहता था न पूछें मेरा हाल!
आप को सुन कर हंसी आ जाएगी

गर्दिश-ए-दौरां को समझा दीजिए,
हमसे उलझेगी तो मुंह की खाएगी

वो मिटाने को हैं ऐ आसी हमें!
ये खलिश भी एक दिन मिट जाएगी

●

मे १११ तिथि
किसी के हक

कभी किसी के किसीके से नहीं है
किसी किसीके ऊपर किसी से

किसी किसीके किसीके से नहीं है
किसी किसीके किसीके से नहीं है

किसी किसीके किसीके से नहीं है
किसी किसीके किसीके से नहीं है

किसी किसीके किसीके से नहीं है
किसी किसीके किसीके से नहीं है



तेज़ रफ़्तारियां
भूख बीमारियां

नेक किरदारियां
झूट मक्कारियां

इक सुकूं के लिए
उम्र भर ख़ारियां

चाँदनी धूप में
कब रहीं यारियां

ज़िन्दगी जी के मर
छोड़ लाचारियां

आसमां से उतर
छोड़ सरदारियां

हम भले या बुरे
तेरी फनकारियां

घर से ऊँची न कर
चार दीवारियां

कुछ मुसाफ़िर गए
कुछ की तैय्यारियां

तू भी आसी संभल
छोड़ ख़ुदारियां

●



कभी रंज-ओ-गम, कभी बे-कसी है!
मिरी ज़िन्दगी भी अजब ज़िन्दगी है

गिला क्या करूं, इन के जौर-ओ-सितम का
हमेशा से उन की ये आदत रही है

मुहब्बत में जीना, मुहब्बत में मरना!
मिरी ज़िन्दगी का अक़ीदा यही है

हुआ क्या है आख़िर हमें भी पता हो!
भला हम से क्यों, आज ये बेरुखी है

अगरचे, ग़म-ए-दैहर का सामना है!
मगर, मेरे होंठों पे फिर भी हंसी है

बयां क्या करूं कैफ़ियत दिल की आसी
मुहब्बत में अब जान पर आ बनी है





सुब्हो दम का मजा नहीं लेते
लोग ताजा हवा नहीं लेते

झूठ का आसरा नहीं लेते
दर्द वाले दवा नहीं लेते

बरसर-ए-इक़तदार हूँ कब से,
लोग क्यूँ फ़ायदा नहीं लेते

कौन जाने वो दिल से देता हो,
हम किसी की दुआ नहीं लेते

बेझिझक अब मिला करो हमसे,
आज कल हम दवा, नहीं लेते

गम खुशी जो भी हो, कुछ भी,
हम बनाम-ए-खुदा नहीं लेते

जिन के रौशन ज़मीर होते हैं,
दूर से ज़ायका, नहीं लेते

इश्क़ होता है अपने बोते पर,
इश्क़ में मशवरा, नहीं लेते

क्या कहा कौन है आसी!
नाम शैतान का, नहीं लेते

●



मसरत चीज़ क्या है रंज क्या है?
ये सारा खेल इक अहसास का है

बहार-ए-ज़िन्दगी कहते हैं जिस को!
किसी के इक तबस्सुम की ज़या है

ख़ता-ए-बेवफ़ाई और हम से?
यक़ीनन आप को धोका हुआ है

अभी बदली नहीं इन्सां की फ़ितरत!
यह अब भी दुश्मन-ए-मेहर-ओ-वफ़ा है

किसी के जौर का हृद से गुज़रना!
हमारी ख़ामशी की इन्तहा है

किसी की बज़्म तक हो क्या रसाई?
मुक़द्दर ही हमारा नारसा है

उसे क्या वासता, दैर-ओ-हरम से!
वो जिसने राज़-ए-उल्फ़त पा लिया है

हज़ारों राहतें उस पर निच्छावर!
तुम्हारा ग़म जिसे रास आ गया है

कभी सुनते नहीं हैं आप वरना,
हमारे दिल में भी इक मुद्दा है

मैं उन को पूजता हूँ जाँ से, दिल से
वो जिनके दिल में अहसास-ए-वफ़ा है

तलातुमख़ेज़ मौजों से गुज़र जा!
लब-ए-साहिल खड़ा क्या, सोचता है

हमें मुतलक नहीं ऐहसास आसी!
हमारी ज़िन्दगी बेआसरा है

●

। जगहों में सब एक जैसे के सिक्के
हैं जिनमें कि सिक्काही सिक्का

। सोचा तब कि क्या तब कि सिक्के
हैं जिनमें सिक्का ही सिक्का

। कि तब कि तब कि सिक्का तब कि
हैं जिनमें कि सिक्का ही सिक्का

। जगहों में सब एक जैसे सिक्के
हैं जिनमें कि सिक्का ही सिक्का

। सिक्का तब कि सिक्का तब कि
हैं जिनमें कि सिक्का ही सिक्का

। सिक्का तब कि सिक्का तब कि
हैं जिनमें कि सिक्का ही सिक्का

ख्वाब जन्नत के हैं बे महल दोस्तो!
कुछ भी होता नहीं बे अमल दोस्तो

लोग कहते हैं जिस को अजल दोस्तो!
ज़िन्दगी का है रद्द-ए-अमल दोस्तो

मेरा दावा नहीं बे महल दोस्तो!
देखना याद आऊँगा कल दोस्तो

हम मिजाज-ए-ग़ज़ल से हैं ख़ूब आशना
हम से क़ायम है हुस्न-ए-ग़ज़ल दोस्तो

रँज के बाद राहत भी है लाज़मी!
आज गुज़रा तो आएगी कल दोस्तो

लाख चाहो मगर, मसअला ज़ीस्त का,
बे अज़ल हो सकेगा, न हल दोस्तो

आज धूमें मचा लें सर-ए-मैकदा!
कौन जाने कहां होंगे कल दोस्तो

अपने अपने तख़य्युल की परवाज़ है!
अपना अपना है रंग-ए-ग़ज़ल दोस्तो

क्या कहे हाल-ए-दिल आसी-ए-ख़स्ता जाँ
चैन दिल को नहीं एक पल दोस्तो

●



सौ सज्जिशें हैं पिनहाँ पर्दा-ए-दोस्ती में !
हम आजमा चुके हैं इन को हँसी हँसी में

मुद्दत से दर-ब-दर हूँ अरसे से कू-ब-कू हूँ,
कोई नहीं है अपना इस दौर-ए-बेहिसी में

रँज-ओ-अलम की योरिश जौर-ओ-सितम की बारिश
क्या क्या मुसीबतें हैं दो दिन की ज़िन्दगी में

उन की हर इक नज़र से ज़ाहिर है हाल दिल का
है गुफ़्तगू का लहजा अन्दाज़-ए-ख़ामशी में

तफ़सीर-ए-दोस्ती हो अब और क्या ज़ियादा !
मेरी ख़ुशी है साहिब बस आपकी ख़ुशी में

टूटें हज़ार हम पर कोह-ए-ग़म-ओ-मुसायब !
हरगिज़ न हम झुकेंगे इन्साँ की बन्दगी में

ऐसा नहीं कि यकसर दुनिया से उठ गई है !
मेहर-ओ-वफ़ा है अब भी लेकिन किसी किसी में

आसी मैं इन से हरगिज़ बेहतर नहीं हूँ फिर भी,
कुछ लोग मुबाला हैं ऐहसास-ए-कमतरी में



□
हमें नफरत है ऐसी ज़िन्दगी से!
तअलुक ही न हो जिस को खुशी से!

इलाही क्या ज़माना आ गया है?
है नफरत आदमी को आदमी से!

बढ़ी है और दिल की बे क़रारी!
कहा है हाल-ए-दिल जब भी किसी से!

हमारी सादगी पर ग़ौर कीजे!
शिकायत आप की और आप ही से!

उन्हें शिकवा है आसू ज़िन्दगी का,
नहीं है जिन को उलफ़त ज़िन्दगी से!



किसी के रँज-ओ-गम में जो बशर शामिल नहीं होता
वो दुनिया में कभी ताज़ीम के क़ाबिल नहीं होता

मरीज़-ए-इश्क़ से ऐ चारागर यह बेरूख़ी कैसी?
किसी बेबस का दिल रखना कोई मुश्किल नहीं होता

निहायत बे मज़ा होती है वो रूदाद उल्फ़त की!
तुम्हारा ज़िक्र जिस रूदाद में शामिल नहीं होता

कोई पूछे मिरे दिल से ज़रा महफ़िल की वीरानी!
कभी महफ़िल में जब वह रौनक-ए-महफ़िल नहीं होता

हकीक़त में उन्हीं को ज़िन्दगानी रास आती है!
वो जिन के वास्ते मरना कोई मुश्किल नहीं होता

सलूक-ए-दह का शिकवा कभी करते नहीं वरना
सलूक-ए-दह से ग़ाफ़िल हमारा दिल नहीं होता

मुहब्बत की कोई मन्जिल नहीं होती ज़माने में,
ये वह दरिया है जिसका कोई भी साहिल नहीं होता

तिरी बातों पे ऐ नासेह यक़ीं हम किस तरह करलें,
ये वो बातें हैं जिन बातों से कुछ हासिल नहीं होता

फ़क़त साक़ी का दिल रखने को पी लेता हूँ ऐ आसी
किसी सूरत में वरना, शामिल-ए-महफ़िल नहीं होता





दिल लगा बैठा हूँ उस अय्यार से!
जिस को नफरत है वफ़ा से प्यार से!

देखिए हम किस क्रदर हैं बे नयाज़!
कुछ न माँगा हुआ की सरकार से!

ऐ निर्गोह-ए-नाज़ तेरा शुक्रिया!
मुतमयन है दिल तिरी गुफ़तार से!

किस लिए हूँ ज़िन्दगी से बद गुमाँ!
काश वह पूछे किसी दिन प्यार से!

ज़िन्दगी भी हम से है बे ज़ार सी!
ज़िन्दगी से हम भी हैं बेज़ार से!

हर बशर के वासते है लाज़मी!
काम ले शीरीनी-ए-गुफ़तार से!

आप की खातिर हुए बरबाद हम!
आप भी हैं हम से कुछ बेज़ार से!

दोस्ती उन से निभे भी किस तरह?
मैं हूँ दीवाना तो वह हुशियार से!

ग़ैर तो फिर ग़ैर हैं आसी मगर,
आप भी कुछ कम नहीं अग़यार से!

●



रात अच्छा लगा!
चाँद तुम सा लगा!

आ गया जिस पे दिल!
कौन कैसा लगा!

हीर राँझा लगी!
हीर राँझा लगा!

जिस किसी से मिले!
कम ज़ियादा लगा!

खुद को पहचानते!
इक ज़माना लगा!

अपनी अपनी नज़र!
कौन कैसा लगा!

कुछ पकड़ में नहीं!
सब हवा सा लगा!

खेल खेला कोई!
घर किसी का लगा!

बस कि रिसता रहे!
ज़ख्म ऐसा लगा!

कल की छोड़ो मियाँ!
आज कैसा लगा?

तुम मिरे हो गए!
वक्त कितना लगा?

जब कि तैराक तुम!
पार मैं जा लगा!

शम्स आसी फ़ज़ूल!
शायर अच्छा लगा!

●



मुफलिसों पर जब कभी आया शबाब!
घड़ लिए दुनिया ने क्रिस्से बे-हिसाब!

कौन जाने इन की क्या ताबीर हो!
हम ने आँखों में सजाए हैं जो ख़्वाब!

लड़खड़ा जाएं न क्यूँ हम बे-पिए!
उन की आँखों से छलकती है शराब!

हाए हम इस का मुकद्दर क्या कहें?
एक दिल है और ग़म हैं बे हिसाब!

लज्ज़त-ए-शीरीनी-ए-हस्ती कहाँ?
तल्खियों में कट गया दौर-ए-शबाब!

राहबर ने हर क़दम धोका दिया!
मैं ये समझा, मेरी किसमत है ख़राब!

दरहम-ओ-बरहम है नज़्म-ए-ज़िन्दगी!
ऐ ग़म-ए-दौराँ तिरा ख़ाना ख़राब!

होश कर ऐ शैख़ अब भी वक़्त है!
तुझ को ले डूबेंगे ये ज़न्नत के ख़्वाब!

हम से दुनिया ने छुपाए थे जो राज़!
ख़ुद-ब-ख़ुद होने लगे वो बे नक्राब!

ज़िन्दगी भर हज़रत-ए-आसी रहे!
रहगुज़ार-ए-शौक़ में नाकामयाब!

●



तुम को चाहा तुम को पूजा!
क्या ये मेरा पागलपन था?

पल में तोला पल में माशा!
नादाँ यह दुनिया है, दुनिया!

तेरा हो कर जीना चाहा!
मैं भी कितना दीवाना था!

तेरा रुतबा अर्श से ऊन्चा!
तुझको मुझसे निसबत ही क्या!

मेरी तो हस्ती ही क्या थी!
लेकिन तू ने किस को बख्शा!

तेरा हुस्न है आलम, आलम!
मेरा इश्क है तनहा तनहा!

ओ मुँह फेर के जाने वाले!
दुनिया क्या सोचेगी सोचा!

क्रतरे की औक्रात ही क्या है?
क्रतरा क्रतरा दरिया दरिया!

कौन उट्टा तेरी महफिल से!
किसकी उम्र का सागर छलका!

अपना अपना जौक्र-ए-नज़र है!
किसका जलवा कैसा पर्दा!

तेरी इज़्ज़त महफिल महफिल!
मैं शायर आवारा रुसवा!

माना, खाक बसर हूँ फिर भी!
याद करोगे याद आऊँगा!

यह जीना भी क्या जीना है
इस जीने से मरना अच्छा!

दुनिया किस को रास आई है
किसको रास आएगी दुनिया!

हम ने सुध बुध खो दी आसी
उसने इस अन्दाज़ से देखा!

●



कभी तसकी कभी आज्ञार भी है!
मुहब्बत फूल भी है खार भी है!

पिघल जाती है मिसल-ए-शमा लेकिन
मुहब्बत आहनी दीवार भी है!

तिरे होंठों पे है इन्कार लेकिन
तिरी आँखों में कुछ इक्रार भी है!

बजाहिर हैं सभी गमख्वार लेकिन,
हकीकत में कोई गमख्वार भी है?

कभी उन की नज़र है, वजह-ए-तसकी,
कभी चलती हुई तलवार भी है!

न जा इस पर कि मैं चुप हूँ सितम पर,
ये खामोशी लब-ए-गुफतार भी है!

ज़माना तन्ज़ फरमा भी है लेकिन,
उलझना इश्क़ से बेकार भी है!

फ़क़त गुफतार पर नाज़ाँ है आसी
ख्याल-ए-खूबी-ए-किरदार भी है!





नाला-ए-दिल राएगाँ देखिए कब तक रहे
ना मुरादी कामराँ देखिए कब तक रहे

मेरी उल्फत का यक्रीं देखिए कब हो उन्हें?
ये हक्रीकत दास्ताँ देखिए कब तक रहे

देखिए कब तक रहें ज़िन्दगी पर हम गिराँ?
ज़िन्दगी हम पर गिराँ देखिए कब तक रहे

देखिए कब तक रहें दर-ब-दर की ठोकरें
गर्दिश-ए-हफ़्त आस्माँ देखिए कब तक रहे

देखिए कब तक न हों, कामरां ऐ दोस्त हम
बख़्त हम से सरगराँ देखिए कब तक रहे

देखिए आसी पे हो कब इनायत आप की
ना मुक़मल दास्ताँ देखिए कब तक रहे





इस तरह के लुत्फ से कोई कहाँ तक शाद हो?
लुत्फ के पर्दे में जब बेदाद ही बेदाद हो!

ऐसे जीने से कोई क्या मुतमयन, क्या शाद हो?
हर नफ़्स जब आह-ओ-जारी हर नफ़्स फ़रियाद हो

मेरी बरबादी का क्रिस्सा मेरे ग़म की दास्ताँ!
ऐ वफ़ा नाआशना शायद तुझे कुछ याद हो

बिन तिरे महसूस यूँ करता हूँ जैसे ज़िन्दगी!
सर-ब-सर मुझ पर कोई इल्जाम-ए-बेबुनियाद हो

रफ़ता-रफ़ता मिट रहे हैं, मेरी बरबादी के नक्श!
ओ सितमगर फिर कोई ताज़ा सितम इजाद हो

इस तरह सूनी है आसी ज़िन्दगी उन के बग़ैर
जिस तरह कोई मकाँ मुद्दत से ग़ैरआबाद हो





और मुश्किल ये आ पड़ी हम पर
तन्ज़ करते हैं आप भी हम पर!

फिर भी ज़िन्दा हैं हम ज़माने में!
हर ज़फ़ा उस ने तोड़ ली हम पर!

मिट रहे हैं खुलूस के बन्दे!
ख़त्म है, दौर-ए-आशक़ी हम पर!

सादा लोही का यह सिला पाया!
अब बिगड़ता है हर कोई हम पर!

बिन तिरें घूमते हैं जब तनहा!
मुस्कुराती है चान्दनी हम पर!

एक तोहमत हैं ज़िन्दगी पर हम!
एक तोहमत है ज़िन्दगी हम पर!

रोज़ जौर-ओ-अताब होता है!
हो निगह-ए-लुत्फ़ भी कभी हम पर!

क्या ख़बर थी कि एक दिन आसी
मुस्कुराएगा हर कोई हम पर!





फिर परीशां हाल है क्लब-ओ-जिगर क्या कीजिए
अब इलाज-ए-गर्दिश-ए-शाम-ओ-सहर क्या कीजिए

मेहरबाँ हो भी अगर अब चारागर, क्या कीजिए
कर चुका है! दर्द ही इस दिल में घर क्या कीजिए

देखिए कब मौत का झोंका बुझा डाले इसे
जिन्दगी है इक चराग-ए-रहगुजर क्या कीजिए

हम से होता ही नहीं दर्द-ए-मुहब्बत का इलाज
अब यही कहते हैं हम कुछ सोच कर क्या कीजिए

राहत-ओ-आराम का इस में नहीं कोई गुज़र
हो रही है ज़िन्दगी फिर भी बसर क्या कीजिए

जब हमारे लब पे आती है कभी मतलब की बात
हंस दिया करते हैं वो मुँह फेर कर, क्या कीजिए

सोचते हैं हाल-ए-दिल हो किस तरह उन से बयाँ
वो बिगड़ जाते हैं हर इक बात पर, क्या कीजिए

हम ने जिन की चाह में बरबाद कर दी ज़िन्दगी
हम पे होती ही नहीं उन की नज़र, क्या कीजिए

हम ने आसी उन का हर इलज़ाम अपने सर लिया
अपने दुश्मन थे हमीं कुछ इस क़दर क्या कीजिए

●



मौजों से टकराए हैं हम तूफानों से खेले हैं
इक जीने की खातिर हमने क्या क्या सदमे झेले हैं

क्लब-ओ-नज़र के अफसाने ये रौनक-ए-बज़म-ए-ऐशोतरब
जीते जी की बातें हैं सब जीते जी के मेले हैं

इनके दम से रौनक-ए-हस्ती इनके दम से ये दुनिया
खाकबसर हैं ज़ाहिर में जो लोग बड़े अलबेले हैं

ये अपनी हिम्मत थी हम हर मौज-ए-बला से पार हुए
खेल बहुत दिलदोज़ थे वरना जो तकदीर ने खेले हैं

सोचते हैं हम तिशना लबों को किसने आज नवाज़ा है
किसने अपनी मस्त नज़र से रगीं ज़ाम उंडेले हैं

उन लोगों पर काश तिरी कुछ चश्म-ए-अनायत हो जाती
जिन लोगों ने तेरी खातिर बरसों सदमे झेले हैं

आसी जीस्त की राहों में मिल जाए किसी का साथ मगर
ये तकदीर की बातें हैं सब यह तकदीर के मेले हैं





मिरी दुनिया-ए-दिल ज़ेर-ओ-ज़बर है
मुहब्बत की नज़र भी क्या नज़र है

हमारा बख़्त भी क्या औज़ पर है!
मिज़ाज-ए-दुश्मनाँ ज़ेर-ओ-ज़बर है

सहर तक खाक भी बाक़ी न होगी!
ये बज़्म-ए-माह-ओ-अंजुम रात भर है

मिरी माने तो माने क्या मेरा दिल!
ये काफ़िर आप के ज़ेर-ए-असर है

अमीर-ए-शह को इस से गरज़ क्या?
फ़कीर-ए-शह कब से दर-ब-दर, है

हमारा दिल जिसे कहती है दुनिया!
अगर पूछे वो आसी ही का घर है





ग़म में इक लुत्फ-ए-शादमानी है!
ठोकरो में भी कामरानी है

सिर्फ़ इक इश्क़ ग़ैरफ़ानी है!
वरना, हर चीज़ आनी-जानी है

जो नहीं आशना मुहब्बत से!
दिल पे उस बुत की हुक्मरानी है

मौत और ज़िन्दगी में है यह फ़र्क़!
इक हकीक़त है इक कहानी है

याद तेरी है जीस्त का हासिल!
ग़म तिरा वजह-ए-शादमानी है

चश्म-ए-पुरनम ये मेरी ख़ामोशी!
दिल के ज़ख़्मों की तरजमानी है

क्या बुरा, जो किसी के काम आए?
जान इक दिन तो ख़ैर जानी है

जाँ है अटकी लबों पर ऐ आसी!
चारासाज़ों की मेहरबानी है





चारा-ए-दर्द-ए-निहाँ बन कर रहे
वो हमारे राज़दाँ बन कर रहे

हम से क़ायम था वक्रार-ए-ज़िन्दगी!
फिर भी गर्द-ए-कारवाँ बन कर रहे

यह ज़माना तन्ज़ फरमाता रहा,
हम मुहब्बत की जुबाँ बन कर रहे

मौत भी उन से रही दामन कशाँ!
आप जिन के मेहरबाँ बन कर रहे

दिल की दुनिया, उम्र भर रौशन रही!
दाग़ दिल के कहकशाँ बन कर रहे

इस में कोई मसलेहत थी दोस्तो!
हम जो अब तक, बेजुबाँ बन कर रहे

हम रहे ख़ामोश ऐ आसी मगर,
इक सरापा दास्ताँ बन कर रहे





शौक्र दिल में, और लब पर खामशी भी चाहिए
दिल लगाने में रज़ा कुछ आप की भी चाहिए

शिद्दत-ए-ग़म में लबों पर कुछ हंसी भी चाहिए
ज़िन्दगी में यह अदा-ए-ज़िन्दगी भी चाहिए

किस तरह दिल से बुझा दूँ याद-ए-जानाँ के चराग़
दिल की महफ़िल के लिए कुछ रौशनी भी चाहिए

सिर्फ़ ख़्वाहिश ही से, हो सकता नहीं दीदार-ए-दोस्त
क़ैस की सी रात दिन आवारगी भी चाहिए

बन्दिश-ए-इलफ़ाज़ ही पर शायरी कायम नहीं
वारदात-ए-ज़िन्दगी की चाशनी भी चाहिए

खाक है वो ज़ीस्त जिस में हो न आसी इन्क़लाब
ज़िन्दगी में इन्क़लाब-ए-ज़िन्दगी भी चाहिए





जब उनकी याद आई, बे-इख्तियार रोए
दिल बार बार धड़का गम बार बार रोए

वो मेरा हाल सुन कर बे-इख्तियार रोए!
दीवाने हो गए वो दीवाना वार रोए

हर इक नज़र से कितनी हसरत टपक रही थी
बरबादियों पे मेरी जब गम गुसार रोए

मौला वो दिन ना लाए, ऐ मुझ पे हंसने वाले!
मैं तुझ पे मुस्कुराऊँ तू ज़ार ज़ार रोए

तकदीर ने दिखाए हमको अजीब मंज़र!
गह कहकहे लगाए गह ज़ार ज़ार रोए

हम तुमको भूल बैठे लेकिन सितम है फिर भी
दिल तुमको याद करके क्यूँ बार बार रोए

देखा कभी जो मन्ज़र मेरी तबाहियों का!
वह मुँह से कुछ न बोले ज़ार-ओ-क्रतार रोए

दिल की लगी का मतलब, शायद यही है आसी
दिल बेकरार तड़पे दिल बेकरार रोए





सर पे आई जो आफ़त वो टल ही गई
ज़िन्दगी रंज-ओ-ग़म से निकल ही गई

लाख मोहतात थे दीदा-ओ-दिल से हम!
फिर भी उनकी नज़र चाल चल ही गई

उम्र भर हम रहे ग़म से दामन कशाँ!
ज़िन्दगी आप के ग़म में ढल ही गई

राज़ रक्खा मुहब्बत के हर राज़ को!
फिर भी ये बात मुँह से निकल ही गई

चारा साज़ों के इल्ताफ़ का शुक्रिया!
ज़िन्दगी ग़म के साँचे में ढल ही गई

आप ने लाख इस को न चाहा मगर!
अन्जुमन में मेरी बात चल ही गई

लाख हमने किया ज़ब्त दिल पर मगर!
उन को देखा तबीयत मचल ही गई

जब भी आसी मुझे वो मिले राह में!
देख कर हमको ये दुनिया जल ही गई





शम-ए-दुनिया किसी की याद हसरत मौत की यारो
इन्हीं दो चार पर है अब मदार-ए-ज़िन्दगी यारो

खुशामद जी हुजूरी, मसलेहतकोशी, गरज़मन्दी
यही है ज़िन्दगी तो फिर हमारी बन्दगी यारो

किसी की चाह में जीते किसी की चाह में मरते
हमारा भी कोई होता यह हसरत ही रही यारो

तुम्हारे साथ रह कर भी रया कारी नहीं आई
तुम्हारी क्या खता इसमें मिरी बदक्रिस्मती यारो

वो जिन की दोस्ती पर आज इतराते हो तुम इतना
कभी अपनी भी उन लोगों से रस्म-ओ-राह थी यारो

बफैज़-ए-मसलेहत जीना, बफैज़-ए-मसलेहत मरना
यही इक खासियत है आज के इस दौर की यारो

कहां तक तुम फ़रेब-ए-दोस्ती खाने से रोकोगे,
संभल जाएगा खुद ही ठोकरें खाकर कोई यारो

न जीना इख्तियारी है न मरना इख्तियारी है
खुदा जाने सज़ा है ज़िन्दगी किस जुर्म की यारो

तुम्हारी ही करम फ़रमाईयों का फ़ैज़ है वरना
हमें अपने पराए की कहाँ पहचान थी यारो

इसी को आगही कहते हैं इस दौर-ए-सियासत में
जहाँ तक हो सके हँसते रहो झूटी हँसी यारो

ये आह-ओ-ज़ारियाँ कैसी, ये नोहा ख़ानियाँ कैसी?
अगर जीना नहीं आता तो कर लो खुदकुशी यारो

हम इतना जानते हैं आसी-ए-गुस्ताख़ की बाबत
बड़ा ख़ामोश रहता था कभी यह आदमी यारो

●



हासिल हमें भी क़ुरबतें थीं आप की कभी
यानी हमें भी रास थी यह ज़िन्दगी कभी

हम भी बनाम-ए-दोस्ती खाते रहे फ़रेब!
हम पर भी था ये आलम-ए-दीवानगी कभी

हम भी थे कामयाब मुहब्बत में दोस्तो!
हम पर भी यानी वो निगह-ए-लुत्फ़ थी कभी

पहरों किसी की याद में खोए रहे हैं हम!
ग़महाए ज़िन्दगी से जो फ़ुर्सत मिली कभी

हम और उन से शिकवा-ए-जौर-ओ-सितम गलत
मजबूर हो गए हैं, सो वो भी कभी कभी

उनसे बिछड़ के उम्र भर देते रहे फ़रेब!
हम ज़िन्दगी को और हमें ज़िन्दगी कभी

वो और मेहरबान मेरे हाल-ए-ज़ार पर?
क्या क्या कमाल करते हैं ये लोग भी कभी

अपनी तबाहियों का उड़ाया है खुद मज़ाक़,
खुद क़हक़हे लगाए हैं हम ने, कभी कभी

खुद से फ़रार चाहने वाले मुझे भी देख,
हर सख़्ती-ए-हयात सही, उफ़ न की कभी

मायूस इस क़दर भी नहीं ज़िन्दगी से हम!
ज़िन्दा रहे तो रास भी आ जाएगी कभी

आसी तमाम उम्र रहीं आह-ओ-ज़ारियाँ!
देखी न तेरे होंठों पर हम ने हँसी कभी

●



जो भी है फ़रियादी है,
ये कैसी आज़ादी है,

बन्दिश है तो जीने पर!
वरना सब आज़ादी है,

तेरी मुहब्बत तेरी नफ़रत!
हर पहलू बरबादी है,

तुझ से क्या फ़रियाद करें!
तू तो खुद फ़रियादी है,

आसी सचमुच तेरी तरह
ग़ज़ल भी सीधी सादी है,





आरजू-ए-करार कौन करे
बेहिसी इख्तियार कौन करे

खुद को रुसवा-ओ-ख्खार कौन करे
इश्क का कारोबार, कौन करे

हम कि बेहाल हैं मगर ऐ दोस्त
जी हुजूरी शिआर, कौन करे

अब तिरी याद भी नहीं आती
पुरसश-ए-हाल-ए-ज़ार, कौन करे

यह जो दिन कट रहे हैं आपसे दूर
ज़िन्दगी में शुमार, कौन करे

अपनी बरबादियों का छेड़ के जिक्र
आप को शर्मसार, कौन करे

दुश्मनी दोस्ती के परदे में
ये चलन इख्तियार, कौन करे

तुम हमारे हो ऐतबार तो है
वक्त का ऐतबार, कौन करे

●



और किस तरह ज़िन्दगी करते
उम्र गुज़री है खुदकुशी करते

ज़िन्दगी में कोई कशिश ही न थी
वरना कोशिश निबाह की करते

आप में कोई वस्फ़ तो होता,
आप की नज़र जान भी करते

ऐ कि मुद्दों को पूजते हो तुम,
काश ज़िन्दों का ज़िक्र ही करते

हर तरफ़ भीड़ थी खुदाओं की
लोग किस किस की बंदगी करते

जैसे माहौल में जिए, हम लोग,
आप होते तो खुदकुशी करते

हम तो बे-दोस्त ही भले आसी
दोस्त होते तो दुश्मनी करते



□
किन्तु किन्तु ही किन्तु ही
किन्तु किन्तु ही किन्तु ही

किन्तु किन्तु ही किन्तु ही
किन्तु किन्तु ही किन्तु ही

किन्तु किन्तु ही किन्तु ही
किन्तु किन्तु ही किन्तु ही

किन्तु किन्तु ही किन्तु ही
किन्तु किन्तु ही किन्तु ही



हमदर्दी जतलाने वाले
निकले आग लगाने वाले

आखिर तुझको ये क्या सूझी?
मंजिल से लौट आने वाले

तुम बस्ती वालों से निसबत?
हम ठहरे वीराने वाले

सोच समझ कर दामन फैला!
ओ दामन फैलाने वाले

जाने खुद कब समझेंगे
औरों को समझाने वाले

दुनिया वाले क्या सोचेंगे?
खामोशी अपनाने वाले

काश हकीकत भी दोहराते!
अफसाने दोहराने वाले

शायद तेरा कोई नहीं है!
रात गए घर जाने वाले

हम रिन्दों से इन की हस्ती!
वरना, यह मयखाने वाले?

आसी रोके रुक जाएँगे?
आने वाले, जाने वाले

●

जिन्दगी के मारे लोग / 95



इक ज़माना था!
आशियाना था!

क्या छुपाना था?
गम पुराना था!

दिल से मिलते थे!
क्या ज़माना था?

जान भी देते!
आज़माना था!

फूट कर रोए!
मुस्कुराना था!

जी लिया, जब तक!
आब-ओ-दाना था!

जान जानी थी!
दिल को आना था!

क्या गिले शिकवे?
दोस्ताना था!

आबरू कैसी?
घर बचाना था!

इश्क करतब है?
कर दिखाना था!

हम तो थे नादाँ!
तू तो दाना था!

सौ ठिकाने थे!
बे-ठिकाना था!

कौन है आसी?
इक दीवाना था!

●



जुनूँ की हदें फाँदना चाहता हूँ
बहुत सो चुका जागना चाहता हूँ

सभी दाग धो डालना चाहता हूँ!
मैं हर रोज़ इक हादसा चाहता हूँ

मुझे देने वाले ने सब कुछ दिया है!
मैं हैराँ हूँ अब और क्या चाहता हूँ

मिरे हासिदों को ये क्या हो गया है?
ये हमदर्दियां जानना चाहता हूँ

इवज प्यार के नफ़रतें ही तो दीं हैं!
सिला अब मैं किस बात का चाहता हूँ

भला था तो सब का भला चाहता था!
बुरा हूँ तो सब का बुरा चाहता हूँ

तुझे हक है या रब बना दे मिटा दे!
तेरा हूँ तेरी ही रज़ा चाहता हूँ

मुझे ज़िन्दगी की दुआ देने वाले!
तेरा मुद्दा जानना चाहता हूँ

मेरे दोस्त दर्द आशना हैं ही लेकिन,
मैं दुश्मन भी दर्द आशना चाहता हूँ

ये इक शर्त है दर्द-ए-दिल देने वाले,
कि मैं दर्द-ए-दिल ला-दवा चाहता हूँ

मैं मूसा नहीं हूँ मगर फिर भी आसी,
तुझे इक नज़र देखना चाहता हूँ

•



बैठे हो सर-ए-राहगुज़र क्यूँ नहीं जाते
तुम लोग तो घर वाले हो घर क्यूँ नहीं जाते

ये वक़्त के हाकिम हैं सुना, वक़्त के हाकिम
ये कहते हैं मर जाओ तो मर क्यूँ नहीं जाते

इस बात से जाहिर है तुम्हीं एक ख़ुदा हो,
हम वरना किसी और के दर क्यूँ नहीं जाते

पल ही में गुज़र जाती हैं सुख चैन की रातें,
दुख दर्द के दिन पल में गुज़र क्यूँ नहीं जाते

मुद्दत, से कुरेदे भी नहीं याद किसी की!
फिर ज़ख़्म मेरे सीने के भर क्यूँ नहीं जाते

इस दौर में जीना है तो मक्कार का जीना,
ये बात हकीक़त है तो मर क्यूँ नहीं जाते

इतने ही अगर तंग हो इस शहर से आसी
चुपके से किसी दूर नगर क्यूँ नहीं जाते





ये तो नहीं है, हम अच्छे फ़नकार नहीं
बात फ़क़त इतनी है दुनियादार नहीं

कौन है जो इस जीने से बेज़ार नहीं!
लेकिन मरने को भी कोई तैय्यार नहीं

इश्क़ में तुम घर बार लुटाए बैठे हो!
लेकिन मैं मेरा तो कहीं घर बार नहीं

मेरी तरह अब ये भी माँग के खाते हैं!
कम्बख़्त मिरे हमसाए भी खुद्दार नहीं

शेयरोँ पर हो दाद के बदले में बे दाद!
आसी सदअफ़सोस कि ओहदेदार नहीं





रहे हैं पाएमाल-ए-गर्दिश-ए-हफ्त आसमाँ बरसों
सहेगा कौन जो हम ने सही हैं सखियाँ बरसों

न मंजिल ही मिली कोई न मंजिल का निशाँ बरसों
भटकते ही फिरे हम मिस्ल-ए-गर्द-ए-कारवाँ बरसों

मुहब्बत की करम फ़रमाइयों का फ़ैज़ है, वरना
कहाँ दो चार दिन की उम्र मुश्किल थी कहाँ बरसों

किसी की बदगुमानी का गिला करने से क्या हासिल
जब अपने आप से हम खुद रहे हों बदगुमाँ बरसों

निज़ाम-ए-गुलिस्ताँ से वो भला क्या मुतमयन होगा
रहा हो बिजलियों की ज़द में जिसका आशियाँ बरसों

यही दुनिया न पूछ जीते जी जिस ने कभी आसी
यही दुनिया मनाएगी हमारी बरसियाँ बरसों





तिनका तिनका नज़र नहीं आता
हम को क्या क्या नज़र नहीं आता

यह हकीक़त है आईने के बग़ैर!
अपना चेहरा नज़र नहीं आता

कौन जाने, कहाँ यह ले जाए?
आब-ओ-दाना नज़र नहीं आता

सब के हमराह एक माज़ी है!
कोई तनहा नज़र नहीं आता

मेरी नब्ज़ों टटोलने वालो!
मेरा चेहरा नज़र नहीं आता

जिस्म ऐसा मकान है जिस में,
रहने वाला नज़र नहीं आता

अपने जैसे हज़ार हैं आसूी
तेरे जैसा नज़र नहीं आता





दर्द वाले हो तो फिर ऐसा करो,
साथ कुछ हमदर्द भी रक्खा करो,

अपना-बेगाना न तुम देखा करो,
हर किसी से मसलेहत बरता करो,

दूसरों के दर्द की छोड़ो मियाँ,
पहले अपने दर्द का चारा करो

गो बुलंदी हो कि पस्ती, हर जगह,
जह-ओ-दिल दोनों खुले रक्खा करो

इस क्रदर खामोशियाँ अच्छी नहीं,
लोग क्या सोचेंगे कुछ सोचा करो

जिसको जो होना है हो ही जाएगा,
कौन, क्यों, कैसे है, कम सोचा करो

साफ़ दिख जाएँगे चेहरे के नक़्श,
आईना नज़दीक से, देखा करो

हमसफ़र होंगे तो बिछड़ेंगे जरूर,
इसलिए इक-इक सफ़र तनहा करो

हर नफ़स आसी खुदा की देन है,
हर नफ़स इक चौकसी बरता करो

●



दोस्त ही दुश्मन अगर हो जाए तो
आपके ये हादसा पेश आए तो

मेरे शिव होने में किस को ऐतराज
जहर पीने का सलीका आए तो

मेरे हाल-ए-जोर पर तुम भी हँसो,
तुम भी तो आखिर मिरे हमदर्द हो

कौन मरता है किसी के वासते,
मरने वाला सामने आ जाए तो

तर्क तो कर दूँ मैं मरने का ख्याल,
जिन्दा रहने की कोई सूरत तो हो

मुझको समझाने से अब, क्या फायदा
दिन तसव्वुर कर चुका हूँ रात को

रोज मरते रोज जीते हैं हमीं !
तूल देते हैं हमीं हर बात को

कोई भी आलम हो ये आसी मियाँ,
कोसते रहते हैं अपनी ज्ञात को





मैं कि किस किस से आशना न हुआ
इक भी मेरे मिजाज का न हुआ

मेरी बरबादियाँ यक़ीनी थीं,
इश्क़ तो सिर्फ़ इक़ बहाना हुआ

ये, हक़ीक़त, है आज तक खुद से,
इत्तफ़ाक़िन भी सामना न हुआ

वह तो ख़्वाहँ थे पेश-क्रदमी के,
हम से हमवार रास्ता न हुआ

इश्क़ में दोनो हो गए बरबाद!
पहले ये हादसा सुना न हुआ

दुनियादारी निभा तो सकते थे!
दिल ही सीने में दूसरा न हुआ

सारी दुनिया की मुन्सफ़ी कर ली,
एक अपना ही फ़ैसला न हुआ

किस मुसीबत से हम नहीं वाकिफ़ ,
किस मुसीबत से सामना न हुआ

मौत पर ख़ैर इख़्तियार किसे,
ख़ुदकुशी का भी हौसला न हुआ

और सब हो गए ख़ुदा वाले!
एक आसी ही बा-ख़ुदा न हुआ

●



क्यों न हम आज हकीकत ही बता दें अपनी
जिस्म अपना है न इस जिस्म में साँसें अपनी

सच तो ये है कि कभी खुद को तलाशा ही न था
और आई भी न थीं बरसों से यादें अपनी

बोझ इस दिल का किसी रोज़ तो हलका होगा
खुलके बरसेंगी किसी रोज़ तो आँखें अपनी

अब ये आलम है हम इक दूजे को सुन लेते हैं
और खामोश भी रखते हैं जुबानें अपनी

जाने किस वक़्त हो अन्दर के सफ़र का आगाज़
जाने कब ख़त्म हों बाहर की ये दौड़ें अपनी

मुझको पहले ही से इरफ़ान का है नशशा, बहुत
मेरे, आगे से, हटा लो ये शराबें अपनी

अब तो हर सिम्त नज़र आता है जलवा अपना
अब तो, जिस सिम्त भी उठती हैं निगाहें अपनी

आईना आईना है आप को क्या देखेगा!
देख सकती हैं कहाँ खुद को निगाहें अपनी

रूह की प्यास है लफ़्ज़ों से कहाँ बुझती है!
बन्द कर दो यह सहीफ़े ये किताबें अपनी

एक तू ही तो समझ सकता है आसी वरना,
कौन समझेगा तिरे शहर में बातें अपनी

●



चन्द लोगों ने ज़िन्दगी की है
वरना कितनों ने खुदकुशी की है

पाक हम भी नहीं हैं हमने भी
चड़ते सूरज की बन्दगी की है

जिस को चाहा है दिल से चाहा है
किस ने परवा जहान की, की है

हम वही हैं हमारे तौर वही
सिर्फ पीने में कुछ कमी की है

क्यूँ बिगड़ते हैं लोग हमने, मियाँ
कब किसी की बराबरी की है

तिनका तक भी न तोड़ पाए कभी
फ़िक्क सारे जहान की, की है

दोस्त हम भी नहीं रहे अपने
किस ने किस से ज़्यादाती की है

सब ने देखा है दूर से, वो भी
हमने आसी से बात भी की है





कौन से हम मर गुजरे हैं
देखें कब दिन फिरते हैं

खुल कर हंस-रो लेते हैं
तुम लोगों से अच्छे हैं

मौत की किस को परवा है
हम सायों से डरते हैं

आप हमारे ग़ैर सही!
हम भी कौन से अपने हैं

सिर्फ हवेली ऊँची हो!
खोटे भी चल जाते हैं

हम इन्सान न बन पाए!
लोग खुदा बन बैठे हैं

कोई किसी का तोड़ नहीं
हम सब अपने जैसे हैं

मर कर भी आराम कहाँ
दीवारों पर लटके हैं

आसी घर उजड़ें या दिल
बसते, बसते, बसते हैं

●



बेदाद गर हुआ कि कोई बेवफा हुआ
क्या इस का जिक्र कीजिए, जो भी हुआ, हुआ

पुरसिश को आप आए, इधर दम हवा हुआ
किस वक़्त हाए आप का वादा वफा हुआ

क्या पूछते हो इश्क़ मेरे हक़ में क्या हुआ
आफ़त हुआ अज़ाब हुआ इक बला हुआ

मुझसे जो पूछिए तो पयाम-ए-फ़ना हैं सब
साहिल हुआ सफ़ीना हुआ नाख़ुदा हुआ

इस बेकरार दिल को है, कितना सुकून अब
मौत आ गई कि आप का वादा वफ़ा हुआ

मरता तेरा ख्याल भी होता अगर जुदा
मुझसे तेरा ख्याल मगर कब जुदा हुआ

सौ राहतें निसार हैं उस के नसीब पर
जिस कश्ती-ए-हयात का गम नाखुदा हुआ

आखिर कोई जिए तो जिए किस उम्मीद पर
पहलू में एक दिल है सो वो भी बुझा हुआ

निसबत मुझे है इनसे, इन्हें तेरी ज्ञात से
वो आरजू हुई कि कोई मुददआ हुआ

जिस कमनसीब शख्स को गम भी न आए रास
दुनिया में ऐसे शख्स का जीना भी क्या हुआ

मेरा ही हौसला है ये ऐ दोस्त उम्र भर !
हँसता रहा हूँ आग पर भी लोटता हुआ

जीना जो चाहता है तो इकबार मर के देख
आसी नहीं तो ये तिरा जीना भी क्या हुआ

•



जहाँ अपना बसाया जा रहा है
हमें यूँ ही नचाया जा रहा है

मुसल्लसल मुस्कुराया जा रहा है
ये किसको वरगलाया जा रहा है

न जीना इच्छियारी है न मरना
मुझे फिर क्यूँ फंसाया जा रहा है

कहीं रोने पे पाबन्दी लगी है!
कहीं जबरन हँसाया जा रहा है

तुम्हारे चाहने वाले तो हम हैं!
किसे सूली चढ़ाया जा रहा है

गड़े मुर्दे उखाड़े जा रहे हैं!
दिलों को पास लाया जा रहा है

किसी आसी की आमद होगी, वरना
जहन्नुम क्यूँ सजाया जा रहा है





जिस से मिट जाए वक्रार-ए-ज़िन्दगी
क्या हुई वो मज़हबी दीवानगी

इस हकीकत को न भूलो दोस्तो!
चार दिन की चाँदनी है ज़िन्दगी

आदमीयत का तो यह मक़सद नहीं!
आदमी से आदमी की दुश्मनी

जीने वालो जिस तरह चाहे जिओ!
ज़िन्दगी राहत भी है, आज़ार भी

जिससे बढ़ जाएँ दिलों की दूरियाँ!
ऐसे मज़हब को हमारी बन्दगी

प्यार का इख़लास का पैग़ाम दो!
शायरो पैग़म्बरी है शायरी

ये अगर औरों के काम आई नहीं!
हैफ़ है आसी फिर ऐसी ज़िन्दगी





ज़िन्दगी ख़ैर हमको रास नहीं,
मौत भी भूल चुकी हो जैसे

जिसको देखो है वही ख़ौफ़ज़दा
सामने, मौत खड़ी हो जैसे

मैं कि बर्बाद था, बर्बाद ही हूँ!
गर्दिश-ए-वक़्त रुकी हो जैसे

तेरी बातों से गुमां होता है
तू भी मुझसा ही दुखी हो जैसे

आप क्या रूठ गए हैं आसी
ज़िन्दगी रूठ गई हो जैसे





उन को माइल-ब-जौर-ओ-जफ़ा देख कर
बुझ गया दिल ये रंग-ए-वफ़ा देख कर

मुख़्तसर ये है, रूदाद-ए-क़लब-ओ-नज़र
मिट गए हम किसी की अदा देख कर

आप अपनी ज़फ़ा पर पशेमाँ हुए
वह मिरे ज़ब्त की इन्तहा देख कर

यूँ भी सजदे हुए जादा-ए-शौक्र में!
झुक गए हम तिरा नक्रश-ए-पा देख कर

इश्क भी शर्म से सर निगूँ हो गया!
हुस्न को माइल-ए-इल्लिजा देख कर

ऐहल-ए-दुनिया बहुत देर जलते रहे!
हुस्न का इश्क से राबता देख कर

शौक्र से राह-ए-उल्फत पे हों गामज़न!
इस ज़माने की लेकिन, हवा देख कर

राह शौक्र-ओ-मुहब्बत की पुर पेच है
देख कर ऐ दिल-ए-मुब्तला देख कर

इस क्रदर बुझ गया, आसी-ए-खस्तादिल
आप को हर घड़ी यूँ ख़फ़ा देख कर

●

☐

बेकिए की सज़ा मैं क्यों झेलूं
दूसरों की ख़ता मैं क्यों झेलूं

आफ़तों को भला मैं क्यों झेलूं
इतने सारे ख़ुदा मैं क्यों झेलूं

कोई हमदर्द आशना होता
गैर की बहुआ मैं क्यों झेलूं



हमने उनके ऐहद-ओ-पैमाँ की हकीकत देख ली
उनकी उलफ़त देख ली, उनकी मुहब्बत देख ली

जिस क़दर बर्बाद होना था मुझे मैं हो गया,
जिस क़दर थी मेरी किस्मत में मुसीबत देख ली

पर्दा-ए-मेहरो वफ़ा में है निहाँ मकर-ओ-रया !
किस क़दर है ऐहल-ए-दुनिया में शराफ़त देख ली

उनकी महफ़िल तक रसाई ग़ैरमुमकिन थी मगर
फ़िर भी हमने आजमा कर अपनी किस्मत देख ली

उनकी चश्म-ए-मस्त ही कुछ कारगर अब हो तो हो
जाम-ओ-मीना से तो बहला कर, तबीयत देख ली

अपनी किस्मत में कहाँ थी कूचा-ए-जानाँ की खाक
ऐ दिल-ए-बेख़ानुमाँ तेरी बदौलत देख ली

उस बुत-ए-ईमाँ शिकन को देख कर यूँ बेनक्राब,
आज हमने अपनी आँखों से क़यामत देख ली

हज़रत-ए-आसी करें हम, आपका क्या ऐतबार
आप की बातों में है कितनी सदाक़त देख ली





चारा है ग़म-ए-ज़ीस्त का क्या जान गए हम
साक़ी तारे अलताफ़ के क़ुरबान गए हम

कुछ देर की मेहमाँ है सितमख़ेज़िए दुनिया
क्या वक़्त के अंदाज़ हैं यह जान गए हम

अब जाके हुआ है उन्हें अहसास वफ़ा का
जब उनकी ज़फ़ाओं को वफ़ा मान गए हम

साहिल पे डुबों देंगे सफ़ीने को यह ला कर
अहबाब के अतवार को पहचान गए हम

इक हाल में रहती नहीं दुनिया की कोई चीज़
ऐ ग़र्दिश-ए-अय्याम तुझे मान गए हम

आसी कोई देखे तो ज़रा अपनी शराफ़त
इक दुश्मन-ए-ईमाँ को ख़ुदा मान गए हम





क्या बताएँ तुम को हम क्या हो गए
तुम से मिल कर तुम सरापा हो गए

हम मिले ही थे, बिछड़ने के लिए!
हादसे तो इक बहाना हो गए

लोग क्यों हम पर उठाएँ उंगलियां?
हम कहां के ऐसे दाना हो गए

तेरी इक चश्म-ए-करम की देर थी
सैंकड़ों हमदर्द पैदा हो गए

जब किसी से कोई भी रिश्ता न था
क्यूँ तालुक गाएबाना हो गए

आज फिर याद आ गए, कुछ बीते दिन,
आज फिर कुछ ज़ख्म ताज़ा हो गए

हम भले हैं या बुरे इस से ग़रज़?
तुम ने हम को जैसे चाहा, हो गए

हम कभी तनहा न थे तनहाई में!
भीड़ से गुज़रे तो तनहा, हो गए

क्यूँ हुए आसी तेरे दीवाने लोग?
इन के सीने में भी दिल था हो गए

•



राह नहीं थी इतनी मुश्किल
खा गई हम को दूरी-ए-मन्जिल

झूटी आस के रसियाओं को
जीना भी, मरना भी, मुश्किल

कैसे मुमकिन हो सकता है?
हर सीने में, शायर का, दिल

किस किस को मुजरिम, ठहराएँ
कौन नहीं है, अपना क्रांतिल

डूबने वाले डूब चुके हैं!
अब रोने धोने से हासिल?

वादा करना, और निभाना,
कितना आसाँ, कितना मुश्किल

दुनिया का दस्तूर न पूछो!
आप ही मुन्सिफ़ आप ही क्रांतिल

आसी जब डूबे तो जाना!
दरिया, दरिया साहिल, साहिल





फूँक रहा था मेरा घर
भूल गया था अपना घर

जाने कब बेघर कर दे,
पल-पल रोज़, सिमटता घर

हम सब लोग तमाशाई,
दुनिया एक तमाशाघर

मक़सद तो ख़ैरात से है,
किसका दर और किसका घर

आज तलक शर्मिन्दा हूँ,
बचपन में सोचा था घर

मरकज़ फ़ितना साज़ो के,
मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर

अपने घर की बात ही क्या,
आसी अपना अपना घर





खुल ही जाए भला या बुरा कौन है
अपने अन्दर मगर, झाँकता कौन है

मैंने सोचा बहुत, आप भी सोचना!
आज तक इस अना से बचा कौन है

दौर दौरा मजाज़ी खुदाओं का है!
भूल जाओ हकीकी खुदा कौन है

इब्दा भी हो तुम, इन्तहा भी हो तुम!
तुम ही तुम हो कोई दूसरा कौन है

ये कहीं मेरा दीवाना पन तो नहीं!
वरना बेसिम्त यूँ दौड़ता कौन है

इतने शैदाई हैं गीता क़ुरआन के!
गीता, क़ुरआन, की मानता कौन है

तू ही आसी बता एक तेरे सिवा!
ज़िन्दगी आप अपनी जिया कौन है



तेरे प्रेम में मैंने कभी नहीं
तेरे प्रेम में मैंने कभी नहीं

तेरे प्रेम में मैंने कभी नहीं
तेरे प्रेम में मैंने कभी नहीं

तेरे प्रेम में मैंने कभी नहीं
तेरे प्रेम में मैंने कभी नहीं

तेरे प्रेम में मैंने कभी नहीं
तेरे प्रेम में मैंने कभी नहीं



तेरी शफ़क़त के साए साए हैं
ये अलग किस को रास आए हैं

अपना दुखने पे याद आए हैं
हमने कितनों के दिल दुखाए हैं

मेरा होना सयाहत-ए-दुनिया
आप किस सिलसिले से आए हैं

तुम दरख्तों के फल भी साए भी
हम दरख्तों के फल न साए हैं

दरमियाँ हम में और कुछ भी नहीं
एक दूजे को रास आए हैं

रस्म-ए-दुनिया निबाहने के लिए
लोग, जबरन भी मुस्कुराए है

ना मुरादी सी ना मुरादी है!
उन के दर से नरास आए हैं

क्युँ वो कहरो ग़ज़ब से बाज़ आएँ?
हम मुहब्बत से बाज़ आए हैं?

लौट आना पड़ा ज़मीनों पर!
आसमाँ, किसको रास आए हैं

अपने शेयरोँ में आज भी आसी
जाने क्या, क्या समेट लाए हैं

●



किसको किसका है आसरा मालूम
मुझको मालूम तुमको क्या मालूम?

सारी हमदर्दियाँ दिखावे की!
यार लोगों का हौसला मालूम

आप मेरी जुबाँ न खुलवाएँ!
सब को किरदार आपका मालूम

जीने जीने में फ़र्क होता है!
ये हकीकत सभी को क्या मालूम?

किससे अपना अता पता पूछूँ
किसको मेरा अता पता मालूम?

आप इन्सां नहीं फ़रिश्ता हैं!
आपको भूख प्यास क्या मालूम?

हम तो रोज़-ए-अज़ल से आसी हैं!
आप क्या देंगे फ़ैसला मालूम

कौन सा रूप कब दिखाती है!
ग़र्दिश-ए-वक्त तेरा क्या मालूम?

इसलिए आज तक नहीं देखे!
ख़्वाब होते हैं ख़्वाब था मालूम।

किसको कहते हैं मौत का ताँडव
किसको कहते हैं ज़लज़ला मालूम?

अपना शज़रा नसब भी याद नहीं
मेरे क़िस्से ज़रा ज़रा मालूम

तलख़-औं-शीरीं की बात करते हो
कितने लोगों को ज़ायका मालूम?

ऐन पिछले पहर मरा पाया
नाम आसी था शख्स नामालूम

●



वो भूलता थोड़े ही है!
इतना बुरा थोड़े ही है!

तेरा नसीब, मेरा नसीब,
मेरा तिरा थोड़े ही है!

ऐ ज़िन्दगी है ज़िन्दगी,
यह करबला थोड़े ही है!

शायर बला का तू सही,
लेकिन चला थोड़े ही है!

आसी मियां, मोमिन गलत,
पागल हुआ थोड़े ही है!

मन्दिर में तू मस्जिद में तू,
तू, हर जगह थोड़े ही है!

तेरा खुदा, तेरा खुदा,
मेरा खुदा, थोड़े ही है!

दूर का ढोल सुहाना मैं
पाला पड़ा थोड़े ही है

दोज़ख से जन्नत मुत्तकिल
आसी मरा थोड़े ही है!

●



सुन भी लेते वो दास्तां मेरी!
ऐसी किस्मत मगर कहां मेरी!

साख दुनिया में है कहां मेरी!
जिस्म मेरे न इन में जां मेरी!

देखिए और कितनी देर निभें,
आसमानों से यारियां मेरी!

इन से महफूज रख न पाऊंगा,
इतने हमदर्द, एक जां मेरी!

भेज देता है रोज ही मुरशिद,
रोज सुनता है आसमां मेरी!

किसको ऐहसास अपने होने का,
किसको खलती हैं दूरियां मेरी!

और होना है खाक-ओ-पाक मुझे,
और उड़नी हैं धज्जियां मेरी!

जितने मजमून सब तुम्हारे हैं,
जितने इलफ़ाज़, तख्त्रियां मेरी!

जान ले कर ही टलने वाली हैं,
दर-बदरियां यह ख़ारियां मेरी!

हो न जाऊँ, कहीं मैं बेक्राबू,
कस के रखता है डोरियां मेरी!

दरिया, सहरा, पहाड़, दश्त तिरे,
शह के शह, बस्तियां मेरी!

कोई ऊर्दू जुबान सीखे तो,
खाक यह खुश ब्यानियां मेरी!

चौकसी के भी बावजूद आसी!
पकड़ी जाती हैं, चोरियां मेरी!

●



भला हूँ या बुरा, हूँ ना!
तक्राज़ा वक्त का हूँ ना!

मैं तुम सबसे जुदा हूँ ना!
मैं अपना खुद खुदा हूँ ना!

अलग ही सोच का हूँ ना!
मैं, शायर दूसरा हूँ ना!

मुसल्लसल बह रहा हूँ ना!
करूँ भी क्या? हवा हूँ ना!

जुगों को जी रहा हूँ ना!
बता दूँ क्यों? खुदा हूँ ना!

फ़रिश्ता, देवता हूँ ना!
तुम्हें, रास आ गया हूँ ना!

बहुत, याद आ रहा हूँ ना!
अभी, ताज़ा, मरा हूँ ना!

बड़ी, तासीर है, मुझ में,
बुजुर्गों की, दुआ हूँ ना!

हुए जंग-ओ-जदल जब भी,
मैं, इन्सां ही, मरा हूँ ना!

मुहब्बत, इस ज़माने में?
मैं, पागल हो गया हूँ ना!

तुझे, कैसे मैं रास आऊं,
मैं, अपने नाप का हूँ ना!

मुहब्बत किस को रास आई?
मैं, जीता जागता हूँ ना!

मेरी, सब शेखियां, सच्चीं,
किनारे, लग गया हूँ ना!

मैं शायर आदमी क्या खूब
मगर बेफ़ायदा हूँ ना

जुनूँ, ही में सही आसी,
मगर, सच सच बका हूँ ना!

●



इतनी दिलकश होगी दुनिया मेरे बाद!
क्या कोई बाहोश जिएगा मेरे बाद!

मेरी शह पर जिस तिस पर आ जाता है,
क्या होगा दिल मरजाने का मेरे बाद

जो जी में आता है लिखता रहता हूँ
क्या होगा इन दीवारों का, मेरे बाद!

अपनी सारी दौड़ धूप बस इतनी है,
नाम मिरा रह जाए ज़िन्दा मेरे बाद!

और किसे हस्सास तबीयत मत देना,
यानी रूह की प्यास खुदाया मेरे बाद!

रौनक-ए-हस्ती, रौनक-ए-दुनिया, मैं हूँ ना,
डूबे, भाड़ में जाए दुनिया, मेरे बाद!

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई होंगे ही,
क्या, कोई आसी भी होगा मेरे बाद!





मैं जब से बे-ज़रूरत हो गया हूँ
निहायत खूबसूरत हो गया हूँ

बता दूँ क्यूँ ग़नीमत हो गया हूँ
तुम्हारा दरहकीकत हो गया हूँ

फ़िज़ाओं में अबारत हो गया हूँ
मैं ज़र्रा बेशकीमत हो गया हूँ

जिसे देखो मुझी को सोचता है,
मैं कितनों की विरासत हो गया हूँ

तिरे फ़ज़ल-ओ-क़रम का ज़िक्र ही क्या
मैं अफ़साना हकीक़त हो गया हूँ

मैं खुद का दोस्त, दुश्मन, ग़ैर अपना,
ये सब हसब-ए-ज़रूरत हो गया हूँ

कभी छूने लगा हूँ आस्माँ को!
कभी बे-क़द्रो क़ीमत हो गया हूँ

मिरे होने में ख़तरे तो बहुत थे!
अगरचे बाहिफ़ाज़त हो गया हूँ

मुझे क्यूँ भूलते जाते हो मेरो!
मैं क्या दुनिया से रुख़सत हो गया हूँ

मुहब्बत करते करते आज आसी,
बज़ात-ए-ख़ुद मुहब्बत हो गया हूँ

●



आप ही के नहीं
हम किसी के नहीं

आप क़ाबिल तो हैं
दोस्ती के नहीं

हर तरफ बस्तियाँ!
घर किसी के नहीं

तेरे मकरूज़ हैं!
ज़िन्दगी के नहीं

दिन के साथी बहुत
रात ही के नहीं

किस मकाँ में रहूँ?
छत किसी के नहीं

चाँद के तज़करे!
चान्दनी के नहीं

दिल से मिलते हैं दिल
हर किसी के नहीं

आप को अब लगा,
हम कभी के नहीं

ज़हन ही ज़हन हैं!
दिल किसी के नहीं

तौर आसी तरे!
आदमी के नहीं

●



क्या कहा, ज़िन्दगी
बहुआ ज़िन्दगी

इब्तदा, ज़िन्दगी
इन्तहा, ज़िन्दगी

ज़िन्दगी है खुदा
है खुदा ज़िन्दगी

बेखुदी चाहिए
कुछ पिला ज़िन्दगी

जिस बहाने भी आ
रास आ, ज़िन्दगी

तेरा आशिक्र हूँ मैं
कुच्छ सुना ज़िन्दगी

छोड़ शिकवे गिले
खिलखिला ज़िन्दगी

आ बताएं तुझे
है ये क्या ज़िन्दगी

कूचा गर्दी ये छोड़!
मेरे आ ज़िन्दगी

झूट सच ही सुना
कुछ सुना, ज़िन्दगी

तेरा मकरुज हूँ!
मैं तिरा, ज़िन्दगी

खूब नाचूँगा मैं!
तू नचा, ज़िन्दगी

अपना आसी सँभाल
मैं चला, ज़िन्दगी

●



पहले खुद को, फिर उस के बाद, तुझे
गर्दिश-ए-वक्त थम, समझता हूँ!

किन के आँसू मगर के आँसू हैं,
किन के सीने हैं नम, समझता हूँ!

बावजूद आह-ओ-वाह के आसी
क्रुद्ध-ए-ऐहल-ए-कलम, समझता हूँ!





घर से ऐसा गया
फिर ना देखा गया

तेरा मेरा मिलन
अब्र बरसा गया

इतने शौदाई थे
फिर भी तनहा गया





रास्ता मु.ख्तसर नहीं होता
थक गया हूँ, सफ़र नहीं होता

घर तो होता है दिल के, रिश्तों से,
ईट गारे से, घर नहीं होता

लोग लोगों से कब नहीं मिलते,
कब बिछड़ने का डर नहीं होता

डूब जाते हैं, जिन सफ़ीनों का,
नाखुदा मोतबर नहीं होता

लोग दरिया बहाए फिरते हैं,
हमसे दामन भी तर नहीं होता

लाख कोशिश के बावजूद कुछ भी
वक्त से पेशतर नहीं होता

बेठिकानों के सौ ठिकाने हैं!
बेठिकानों का घर नहीं होता

कौन समझेगा इश्क में कोई!
मुब्तला जान कर नहीं होता

जिनको पाने की धुन नहीं होती,
उनको खोने का डर नहीं होता

ये मुक़ाम और मैं, कहाँ आसी
मेहरबाँ तू अगर नहीं होता

●



एक दिन सारे नश्वे उतर जाएँगे
तुम भी मर जाओगे हम भी मर जाएँगे

जब न होंगे तो हम, बदलियों की तरह
आसमानों से हो कर, गुजर जाएँगे

तैर कर जो नहीं, डूब कर ही सही,
देखना! पार हम भी, उतर जाएँगे

रात, धूमें मचा लें सर-ए-मैकदा,
सुबह दम तुम किधर, हम किधर जाएँगे

नाखुदाओं की पहचान होने तो दो,
लोग खुद कश्तियों से उतर जाएँगे

तू ही आसी बता, आखिरी वक्त हम,
तेरा दर छोड़कर किस के दर जाएँगे



क्रतए

पत्थर को गौहर कह कह कर!
बदतर को बेहतर कह कह कर!
हम ने माहौल बिगाड़ा है!
रहज़न को रहबर कह कह कर!

खुशी से, रहबर-ओ-रहज़न का रूप, भरते रहो!
तुम्हारा वक्त है, जो जी में आए, करते रहो!
यही तक्राज़ा है इस दौर की सियासत का,
सहर को वादा करो शाम को मुकरते रहो!

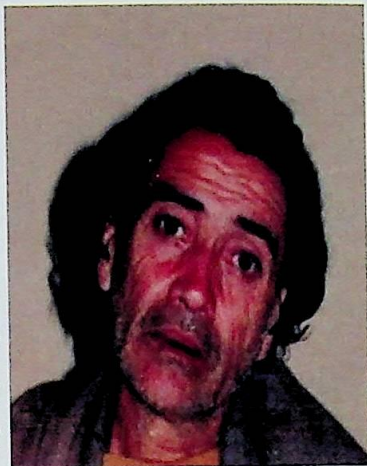
तुमको पड़ जाय जो कभी जीना
सिर्फ अपनी ही ज़िन्दगी जीना
ये भी जीने में है कोई जीना
रोज़ मरना कभी कभी जीना

हर हाल में, हर रंग में, सरगम-ए-अमल रह,
हरगिज़ ना इसे सोच के क्या कहती है दुनिया
तू दुनिया के कहने पे ना जा ऐ दिल-ए-मगमूम
अच्छों को हमेशा ही बुरा कहती है दुनिया

वक्त के दरिया में सब कुछ बह गया
और मैं खामोश तकता रह गया
आज फिर याद आ गये कुछ बीते दिन
आज फिर आँखों से दरिया बह गया

इक ज़माना था कि हर शब्द में मचलते थे चिराग
अब तो हर सुबह लिये ताज़ा सितम आती है
इक वो आलम कि तेरी याद से फुर्सत ही ना थी
इक ये आलम कि तेरी याद भी कम आती है

गलत सब दलीलें, गलत सब हवाले
अंधेरे अंधेरे, उजाले उजाले
हजारों थे दुनिया में, इखलास वाले
मगर गर्दिश-ए-वक्रत ने पीस डाले



यह दोनों शेयर पं. विद्यारतन आसी की
शख्सीयत को उभारते हैं और पाठक को इस
बात के लिए मजबूर करते हैं कि वो आसी की
जिन्दगी में झाँकने की कोशिश करें। कुछ लोग
नार्कदा गुनाहों के लिए दुनिया की नजरों में पापी
या गुनाहगार बन जाते हैं और आसी कहलाते
हैं... और फिर जिन्दगी के दश में अकेले टुण्ड-मुण्ड दरख्त की तरह अपनी ही तन्हाई
में झुलस जाते हैं। उनकी आत्मकथा में नसीब सोया रहता है लेकिन जमीर जागता है।
जिन्दगी उन्हें उदासियों और महरूमियों की सौगात देती है। महरूमियों का यही
एहसास उनको हस्सास बना देता है। ऐसे ही तन्हाई में मेरा शायर दोस्त पंडित
विद्यारतन आसी भी है, जिसने अपने लाशऊर में जिन्दगी का कड़वेपन को पाला है-

आसी की गजलें दिल में बसेरा करने वाली हैं। इनका एक और लुत्फ उठाइए।

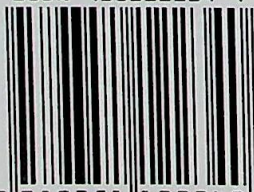
- खालिद हुसैन



Chetna Parkashan

Punjabi Bhawan, Ludhiana-141001

ISBN 935112234-4



9 789351 122340

Zindgi ke Mare Log

₹ 180/-